



# भारत का गज़ीत The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 452]

मई दिल्ली, शुक्रवार, विदम्बर 26, 1986/प्राश्विन 4, 1908

No. 452] NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 26, 1986/ASVINA 4, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Pagina is given to this Part in order that it may be filed as  
a separate compilation

बिस दंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(विवेश कर प्रभाग)

मई दिल्ली, 26 विदम्बर, 1986

प्रधिसूचना

प्रायकर

सा.का.नि. 1111(ग्र).—यह आय पर कर्तृों के सम्बन्ध में दोहरे कराराधन के परिणाम और राजस्व भवित्वन को रोकने के लिए, भारत गणराज्य की सरकार और राजस्व भवित्वन की सरकार और कोरिया गणराज्य की सरकार के बीच एप संवाद भवित्वमय का अनुसमर्थन कर दिया गया है और उक्त भवित्वमय के अनुच्छेद 29 के द्वारा 1 में यापेजित अनुसमर्थन दस्तावेजों का वही प्रगति, 1986 को आवान-प्रदान कर दिया गया है;

भारत ग्रन्थ, आपकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) को भारत 90 और कम्पनी (साम) अप्टिकर अधिनियम, 1984 (1984 का 7) की द्वारा 24 द्वारा प्रदत्त संकेतों का व्रयोग करते हुए, कोरिया सरकार एकल्पित विवेश की है कि उक्त भवित्वमय के सभी उपबंध भारत संघ में लागू किए जायें।

भारत गणराज्य की सरकार

और

कोरिया गणराज्य की सरकार

के बीच

दोहरे कराराधन के परिणाम द्वारा आय पर कर्तृों के संवेदन में राजस्व अविवेतन को रोकने के लिए अधिसमय ।

भारत गणराज्य की सरकार और कोरिया गणराज्य की सरकार

आय पर कर्तृों के संवेदन में शारे कराराधन के परिणाम और राजस्व भवित्वन को रोकने के लिए अधिसमय समझ करने को इच्छा से, बीचे लिख अनुसार हुई है;

अनुच्छेद 1

विवितक भेद

यह अधिसमय उत्तर अविवेतों पर लागू होगा जो किसी एह अवश्य दोनों संविदाकारी राज्यों के लियाई है।

अनुच्छेद 2

अधिसमय के द्वारा आये वाले कर

1. यह अधिसमय प्रत्येक संविदाकारी राज्य की ओर से आय प्रगति जाने वाले कर्तृों पर लागू होगा, जोड़े वे कर हितों में दरीके संगाए जाते हों।

2. कुल भाव अथवा भाव के तर्कों पर लगाए गए रामी कर, जिनमें अल अथवा प्रचल संस्थित के अस्तरण से होने वाले "भ्रमिताभों एवं उद्धमों द्वारा भ्रमा की गई भ्रमारी अथवा वेतनों की कुल रकम पर कर भी शामिल है, भाव पर कर भर माने जाएंगे।

3. जिस वर्तमान करों पर मह अधिसमय लागू होगा, वे इस प्रकार हैं :—

(क) कोरिया के मामले में :

(1) आयकर;

(2) निगम कर; तथा

(3) निकासी कर;

(जिन्हें इसके बाद "कोरियाई कर" कहा जाएगा);

(ब) भारत के मामले में :

(1) आयकर जिसमें उस पर लगने वाला कोई भी अधिनियम शामिल है जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अन्तर्गत लगाया जाएगा;

(2) कम्पनी (लाभ) अतिकर अधिनियम, 1964 (1964 का 7) के अन्तर्गत लगाया गया अतिकर;

(जिन्हें इसके बाद "भारतीय कर" कहा जाएगा)।

4. यह अधिसमय वर्तमान करों अथवा उनकी जगह लगाए जाने वाले करों के अतिरिक्त किसी भी समूल अथवा सारतः वैसे ही करों पर भी लागू होगा जो अधिसमय पर हस्ताक्षर किए जाने की तारीख के बाद लगाए जाएंगे। संविदाकारी राज्यों के सक्षम प्राधिकारी अपने अपने कारायान कानूनों में किए गए महत्वपूर्ण परिवर्तनों के संबंध में एक दूसरे को सूचित करेंगे।

### अनुच्छेद 3

#### सामान्य परिमाणार्थ

1. इस अधिसमय में, जब तक कि संबंध में अन्यथा घोषित न हो :

(क) "एक संविदाकारी राज्य" और "दूसरे संविदाकारी राज्य" पदबन्ध के संबंध की अपेक्षा के अनुसार, भारत अथवा कोरिया अधिप्रेत है;

(ख) "कर" शब्द के संबंध की अपेक्षा के अनुसार भारतीय कर अथवा कोरियाई कर अधिप्रेत है;

(ग) "व्यक्ति" पद में कोई व्यक्ति, कम्पनी और अकितियों का कोई अन्य निकाय शामिल है, जो कर प्रयोजनों के लिए उसका कर पर में माना जाता है;

(घ) "कम्पनी" पद से कोई ऐसा निगमित निकाय अथवा कोई अस उसका अधिप्रेत है जो कर प्रयोजनों के लिए निगमित निकाय के रूप में मानी जाती है;

(ङ) "एक संविदाकारी राज्य का उद्धम" तथा "दूसरे संविदाकारी राज्य का उद्धम" पदों से कम्पनी संविदाकारी राज्य के किसी निवासी द्वारा संचालित उद्धम अधिप्रेत है;

(ज) कोरिया के मामले में "सक्षम प्राधिकारी" पद से अधिप्रेत है वित्त संबंधी प्रथमा उसका प्राधिकृत प्रतिनिधि, और भारत के मामले में नेतृत्व सरकार का वित्त संबंधी (राजस्व विभाग) अथवा उम्मता प्राधिकृत प्रतिनिधि।

(छ) "राष्ट्रिक" पद से किसी संविदाकारी राज्य की राष्ट्रिकता वाला कोई व्यक्ति और कोई भी कानूनी व्यक्ति, भागीदारिता संबंध अथवा अन्य भत्ता जो एक संविदाकारी राज्य में प्रवृत्त कानून में इस प्रकार अपनी हैमियत प्राप्त करता हो, अधिप्रेत है;

(ज) "अन्तर्राष्ट्रीय वातावात" पद से किसी ऐसे अलवान अथवा वायुयान द्वारा कोई भी परिवहन अधिप्रेत है जो कि एक संविदाकारी राज्य के किसी उद्धम द्वारा संचालित हो, भिन्न उस संस्थित के जबकि अलवान अथवा वायुयान द्वारा संचालित कानूनों के अन्तर्गत होता है; या इस अधिसमय के विषय है।

2. यहाँ तक दोनों में से किसी संविदाकारी राज्य द्वारा ही समय को लागू करने का संबंध है, किसी भी पद का जो इसमें परिमापित नहीं हो, जब तक संबंध में अन्यथा घोषित न हो, वही अर्थ होगा जो उस राज्य के उन करों से संबंधित कानूनों के अन्तर्गत होता है; या इस अधिसमय के विषय है।

### अनुच्छेद 4

#### प्राविधि प्रतिवाप

1. इस अधिसमय के प्रयोजनों के लिए "संविदाकारी राज्य का निवासी" पद से अधिप्रेत होगा कोई भी ऐसा व्यक्ति जिस पर, उस राज्य के कानून के अन्तर्गत, उसके अधिकार, निवास, प्रमुख अथवा मूल्य कारबल का स्थान, प्रबंध स्थान अथवा इस प्रकार की किसी अन्य कानूनी के कारण वहाँ कर लगाया जा सकता है।

2. यहाँ पैराग्राफ (1) के उपबन्धों के कारण कोई व्यक्ति दोनों संविदाकारी राज्यों का निवासी हो, वहाँ उसकी हैमियत नीचे लिखे लियों के अनुसार तथ की आएंगी :

(क) वह उस संविदाकारी राज्य का निवासी माना जाएगा जहाँ उसे एक स्थानी निवास गृह उपलब्ध हो। यदि उसे दोनों संविदाकारी राज्यों में स्थानी निवास गृह उपलब्ध हो, तो वह उस संविदाकारी राज्य का निवासी माना जाएगा, जिसके भाव उसके व्यक्तिगत और आधिकारिक प्रबंध विनियोग हितों का केन्द्र;

(ख) यदि उस संविदाकारी राज्य का, जिसमें उसके महत्वपूर्ण हित निहित है, निष्पत्ति नहीं किया जा सकता हो, अथवा यदि उसको दोसी भी संविदाकारी राज्य में कोई स्थानी निवास उपलब्ध नहीं हो, तो वह उस संविदाकारी राज्य का निवासी माना जाएगा जिसमें वह आदान प्रदान होता हो;

(ग) यदि वह आदतन दोनों ही राज्यों में रहता हो अथवा उसमें से किसी भी राज्य में आदतन नहीं रहता हो तो वह उस राज्य का निवासी माना जाएगा, जिसका वह राष्ट्रिक है;

(घ) यदि वह संविदाकारी दोनों राज्यों का राष्ट्रिक है अथवा उसमें से किसी का भी राष्ट्रिक नहीं हो, तो संविदाकारी राज्यों के सक्षम प्राधिकारी पारिषद्वारा सहभर्ता द्वारा ब्रह्म का निर्णय करेंगे।

3. यहाँ व्यक्ति से विभ कोई व्यक्ति, पैराग्राफ-1 के उपबन्धों के कारण दोनों संविदाकारी राज्यों का निवासी हो और वह उस संविदाकारी राज्य का निवासी माना जाएगा, जिसमें उसका वास्तविक प्रबंध-स्थान स्थित है। संयेत की स्थिति में संविदाकारी राज्यों के सक्षम प्राधिकारी पारिषद्वारा सम्मति द्वारा इस प्रबंध का निर्णय करेंगे।

## प्रत्यक्षेद 5

## स्थायी संस्थापन

1. इम अधिगमय के प्रयोगन के लिए, "स्थायी संस्थापन" पद से कारोबार का वह निवित्त स्थान अभिप्रेत है, जिसमें उद्यम का कारोबार सम्मूलतः अधवा अभितः खलाया जाता है।

2. "स्थायी संस्थापन" पद में विशेषतया निम्नलिखित शामिल होंगे :

(क) प्रबन्ध का कोई स्थान;

(ख) कोई शाखा;

(ग) कोई कार्यालय;

(ज) कोई कारखाना;

(झ) कोई कार्यालय; [तथा]

(झ) कोई बान, नेल अथवा गैस का कुद्रा, खदान अथवा ऐसा कोई अन्य स्थान जहाँ से प्राकृतिक संसाधन निकाले जाते हैं।

3. इसी प्रकार "स्थायी संस्थापन" पद में कोई भवन स्थल, कोई निमायि, संयोजन अथवा संस्थापन परियोजना अथवा उसके संबंध में पर्यावरणीय अधिकारी भी शामिल हैं परन्तु वहीं जहाँ इस प्रकार का स्थान परियोजना अथवा गतिविधियां नी भहीने से अधिक अधिक अधिकार जारी रहती हैं।

4. इस अनुच्छेद के पूर्वांकी उपबंधों के होते हुए भी, "स्थायी संस्थापन" पद में निम्नलिखित को शामिल नहीं माना जाएगा :

(क) उद्यम के माल अथवा पद्धति के केवल भण्डारण अथवा प्रदर्शन अथवा सुपुर्देनी के प्रयोजनार्थ मुविधार्थी का प्रयोग;

(ख) उद्यम के माल अथवा पद्धति के केवल भण्डारण अथवा प्रदर्शन अथवा सुपुर्देनी के प्रयोजनार्थ स्टाक रखना;

(ग) अन्य उद्यम द्वारा केवल संभालित करने के प्रयोजनार्थ उद्यम के माल अथवा पद्धति का स्टाक रखना;

(घ) उद्यम के व्यापार अथवा कारोबार में केवल विज्ञापन देने, सूचना देने, वैज्ञानिक अनुसंधान अथवा अन्य कार्यों के प्रयोजनार्थ, जो अनन्य रूप से प्रारम्भिक अथवा सहायक किस्म के हार्य हो, के लिए कारोबार का नियत स्थान रखना;

(ङ) इस पैराग्राफ के उप पैराग्राफ (क) से (झ) में उल्लिखित किसीलकार्यों के अनन्यतः किसी संयोजन के लिए कारोबार का नियत स्थान रखना व्यापार कारोबार के नियत स्थान के समस्त किसीकलाय प्रारम्भिक अथवा सहायक किस्म के हों।

5. पैराग्राफ 1 तथा 2 के उपबंधों के होते हुए भी, यदि किसी स्वतंत्र हैसियत के अभिकर्ता से भिन्न कोई व्यक्ति, जिस पर पैराग्राफ 6 लागू होता है, किसी उद्यम की ओर से कार्य कर रहा [हो] तथा एक संविदाकारी राज्य में, उस उद्यम के नाम से संपर्क करने के लिए प्राधिकार का प्राप्त व्यक्ति करता हो, तो उन कार्यों के संबंध में, जिन्हें वह व्यक्ति उस उद्यम के लिए करता है, उस राज्य में उस उद्यम का स्थायी संस्थापन माना जाएगा, जब तक कि ऐसे व्यक्ति की गतिविधियां पैराग्राफ 4 में उल्लिखित गतिविधियों तक सीमित न हों, जो यदि कारोबार के किसी नियत स्थान के माध्यम से की गयी हों, तो कारोबार का यह नियत स्थान उस पैराग्राफ के कारण एक स्थायी संस्थापन भही होगा।

1. इस उद्यम का विवरण इस उद्यम में कह ११ लाइन से, स्थायी संस्थापन होना महीं माना जाएगा कि वह उस राज्य में किसी वस्तु, सामान्य कमीशन एजेंट, अथवा स्वतंत्र हैसियत वाले किसी अन्य एजेंट के माध्यम से कारोबार करता है, जहाँ ऐसे व्यक्ति अपने कारोबार का काम सामान्य रूप से कर रहे हों।

2. मात्र इन तथा में फि कोई कंपनी, जा एह तंदिवाकारी राज्य को निवासी हो, किसी ऐसी कंपनी को निवित्त करती है अथवा उससे निवित्त होती है, जो दूसरे संविदाकारी राज्य को निवासी हो, अथवा जो उस दूसरे राज्य में (वहीं किसी स्थायी संस्थापन के माध्यम से अथवा अन्यथा) अपना कारोबार करती हो, इनमें से कोई भी कंपनी खुद किसी दूसरी कंपनी का स्थायी संस्थापन नहीं बन सकती।

## प्रत्यक्षेद 6

## प्रबल सम्पत्ति से आय

1. प्रबल सम्पत्ति से आय, पर उस संविदाकारी राज्य में कर संगत जा सकना जिसमें ऐसी सम्पत्ति स्थित हो।

2. "प्रबल संपत्ति" पद उस संविदाकारी राज्य की विधि के अनुसार परिमाणित किया जाएगा जहाँ संबंधित संपत्ति स्थित है। इस पद में किसी भी हासिल में ये शामिल होंगे—प्रबल सम्पत्ति के उपमाध्यन के रूप में सम्पत्ति, कृषि और बन सम्पत्ति में प्रयुक्त पशुधन तथा उपस्कर, ऐसे अधिकार जिन पर भू-संपत्ति संबंधी सामान्य कानून के उपबन्ध लागू होते हों, प्रबल सम्पत्ति को जोगने के अधिकार और खनिज भण्डार, स्वोत तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संचालन के लिए अथवा कार्य करने के अधिकार के प्रतिफल के रूप में परिवर्तनीय अथवा नियत अवायगियों के अधिकार; पांत नीकाएं तथा विमान अवल संपत्ति नहीं माने जाएं।

3. पैराग्राफ 1 के उपबन्ध अवल संपत्ति के प्रत्यक्ष प्रयोग से, किराए पर देने अथवा किसी अन्य प्रकार के प्रयोग से होने वाले आय पर लागू होंगे।

4. पैराग्राफ 1 और 3 के उपबन्ध, किसी उद्यम की अवल संपत्ति से होने वाली आय, पर तथा स्वकलन अवित्त सेवाओं के निपादन के लिए इस्तेमाल में आने वाली अवल संपत्ति से होने वाली आय पर भी लागू होंगे।

## अनुच्छेद 7

## कारोबार से आय

1. एक संविदाकारी राज्य के किसी उद्यम के आम पर केवल उसी राज्य में कर संगत जा सकना जब तक कि वह उद्यम दूसरे संविदाकारी राज्य में स्थित किसी स्थाई संस्थापन के माध्यम से कारोबार म करता हो। यदि कोई उद्यम उपर्युक्त तरीके से कारोबार करता हो, तो उद्यम के लाभों पर दूसरे राज्य में कर संगत जा सकता है, परन्तु उसके केवल उतने अंश पर ही कर संगत जा उस स्थाई संस्थापन के कारण हुआ माना जा सकता है।

2. पैराग्राफ 3 के उपबंधों के अधार स्थृत होए, जहाँ एक संविदाकारी राज्य का कोई उद्यम दूसरे संविदाकारी राज्य में स्थित किसी स्थाई संस्थापन के माध्यम से कारोबार करता हो, तो प्रत्येक संविदाकारी राज्य में होने वाले लाभ को उस स्थायी संस्थापन का ही लाभ समझा जाएगा जिसे, उसके द्वारा प्राप्त होने के तब अपेक्षा के जात जब वह उन्हीं या वैसी ही परिस्थितियों में, उन्हीं या वैसे ही कार्यों में लगा हुआ कोई निवित्त और भिन्न उद्यम होता और उस उद्यम से पूर्णतया स्वकलन रूप से कारोबार करता, जिसका यह, एक स्थाई संस्थापन है।

3. किसी स्थाई संस्थापन के लाभों के निर्धारण में उन व्ययों को कटौतियों के रूप में स्वीकार किया जाएगा, जो स्थाई संस्थापन के प्रयोजनों के लिए गए हों जिनमें इस प्रकार किए गए कार्यकारी तथा सामान्य प्रशासनिक व्यय शामिल रहेंगे, जहाँ वे उम राज्य में किये गए हों जहाँ स्थापन स्थित हैं अथवा अन्यत्र, और जिनकी स्वीकृति उम संविदाकारी राज्य के अपने ग्रान्टरिक कानूनों के उपबंधों के अन्तर्गत की जाती है, जिस में स्थायी संस्थापन स्थित है।

4. कोई नाम, माल इम लिये स्थायी संस्थापन के कारण हुए नहीं माने जाएंगे कि उम स्थायी संस्थापन द्वारा उचम के लिए माल अथवा पर्यवेक्षण वस्तुएँ खरीदी गई हैं।

5. पूर्ववर्ती पैराग्राफों के प्रयोजनों के लिए, स्थायी संस्थापन के कारण हुए माने जाने वाले लाभों को तब तक उसी पद्धति से अपनीवर्षे निर्धारित किया जाएगा जब तक कि उसके विषद् कोई उपयुक्त तथा पर्याप्त कारण नहीं हो।

6. जहाँ आय अथवा लाभों में, आय की वे मर्दे शामिल हों, जिनका इस अभियन्त्र के अन्य अनुच्छेदों में अनुग्रह से विवेचन किया गया है, वहाँ उन अनुच्छेदों के उपबंध इन अनुच्छेद के उपबंधों से प्रभावित नहीं होंगे।

#### अनुच्छेद 8

##### विमान परिवहन

1. एक संविदाकारी राज्य के उचम द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय यातायात में विमान संचालन से हुए लाभों पर केवल उसी राज्य में कर लगाया जा सकेगा।

2. पैराग्राफ 1 के उपबंध, किसी पूल, संयुक्त कारोबार अथवा किसी अन्तर्राष्ट्रीय संचालन एजेंसी में भाग लेने से होने वाले लाभों पर भी लागू होगे।

3. इस अनुच्छेद के प्रयोजनों के लिए "वायुयात संवालन" पद के अन्तर्गत वायुयात के मालिकों अथवा पट्टेदारों अथवा अवकेताग्रों (चार्टर्स) द्वारा वायुयात के जरिये किया जाने वाला व्यक्तियों, पण-धन, माल अथवा डाक का परिवहन, जिसमें अन्य उचमों की ओर से, ऐसे परिवहन के लिए टिकटों की विक्री, किरणा—प्राधार पर वायुयात का प्रारंभिक पट्टा तथा इस प्रकार के परिवहन से प्रत्यक्षतः संबंधित कोई अन्य कार्यकलाप शामिल हैं।

#### अनुच्छेद 9

##### जहाजरानी परिवहन

1. एक संविदाकारी राज्य के किसी उचम द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय यातायात में पोतों के संचालन से प्राप्त लाभों पर केवल उसी राज्य में कर लगाया जाएगा।

2. इस अनुच्छेद के पैराग्राफ 1 के उपबंधों के होते हुए भी, अन्तर्राष्ट्रीय यातायात में पोतों के संचालन से प्राप्त लाभों पर उस संविदाकारी राज्य में कर लगाया जाएगा जिसमें ऐसा संचालन किया जाता है, लेकिन इस प्रकार लगाया गया कर, उस राज्य के ग्रान्टरिक कानून द्वारा अन्यथा लगाये जाने वाले कर के 50 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा।

3. इस अनुच्छेद के पैराग्राफ 1 भी 2 के उपबंध, किसी पूल, संयुक्त कारोबार अथवा किसी अन्तर्राष्ट्रीय संचालन-एजेंसी में भाग लेने होने वाले लाभों पर भी लागू होंगे।

#### अनुच्छेद 10

##### संविदाकारी उचम

##### जहाँ

(क) एक संविदाकारी राज्य का कोई उचम दूसरे संविदाकारी राज्य के उचम के प्रबंध, नियंत्रण अथवा पूँजी में प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षतः भाग लेता है, अथवा

(ख) वे ही व्यक्ति एक संविदाकारी राज्य के उचम और दूसरे संविदाकारी राज्य के उचम के प्रबंध, नियंत्रण अथवा पूँजी में प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षतः भाग लेते हैं,

और दोनों में से किसी भी अवृत्त्या में, दोनों उचमों के बीच उनके आणियिक अधिकारिता व्यक्तियों में ऐसी शर्तें रखी अथवा लगाई जाती हैं, जो वैसी शर्तों से मिल हैं, जैसी स्वतंत्र उचमों के बीच रखी जाती हैं, वहाँ ऐसा कोई लाभ, जो उन शर्तों के वहाँ नहीं की हाजिर में उन उचमों में से एक उचम को प्राप्त हुआ होता, परन्तु उन शर्तों के कारण, उस प्रकार प्राप्त नहीं हुआ, तो वे लाभ उस उचम के लाभों में सम्मिलित किए जा सकेंगे और तकनीकार करारेय हो सकेंगे।

#### अनुच्छेद 11

##### लाभांश

1. एक संविदाकारी राज्य की निवासी किसी कंपनी द्वारा दूसरे संविदाकारी राज्य के निवासी को अदा किए गए लाभांशों पर उस दूसरे राज्य में कर लग सकेगा।

2. तथापि, ऐसे लाभांशों पर उस संविदाकारी राज्य में भी और उस राज्य के कानून के अनुसार कर लगाया जा सकता है, जिस राज्य की लाभांश देने वाली कंपनी निवासी है, परन्तु यदि पाने वाला लाभांशों का हितभागी स्वामी है तो इस प्रकार लगाया जाने वाला कर नीचे बताई गई रकम से अधिक नहीं होगा :

(क) लाभांशों की सकल रकम का 15 प्रतिशत यदि हितभागी लाभांश एक ऐसी कंपनी है, जिसके पास लाभांश ग्रदा करने वाली कंपनी की पूँजी का प्रत्यक्षतः कम से कम 20 प्रतिशत भाग हो ;

(ख) अन्य सभी लाभांशों में लाभांश की सकल रकम का 20 प्रतिशत ।

यह पैराग्राफ उन लाभों के संबंध में कंपनी के कराना पर कोई प्रभाव नहीं लालेगा जिसमें से लाभांशों का भुगतान किया जाता है।

3. इस अनुच्छेद में यथा-प्राप्त "लाभांशों" शब्द का अभिप्राय, शेयरों अथवा ऐसे अन्य अधिकारों से प्राप्त आय से है, जो लाभ में भागीकार अर्ण—दावे नहीं हैं तथा अन्य नियमित अधिकारों से प्राप्त आय से है, जिन पर वही कराना अवश्य लागू होती है, जो उस राज्य के कराना वाग्मून द्वारा शेयरों से प्राप्त आय के मामले में लागू होती है, जिसपर वितरण करने वाली कंपनी निवासी है।

4. पैराग्राफ 1 तथा 2 के उपबंध उस स्थिति में लागू नहीं होंगे यदि लाभांशों का हितभागी स्वामी, जो एक संविदाकारी राज्य का निवासी है, उस दूसरे संविदाकारी राज्य में, जिसकी लाभांश ग्रदा करने वाली कंपनी निवासी है, वहाँ स्थित एक स्थायी संस्थापन के माध्यम से कारोबार करता है, अथवा उस दूसरे राज्य में स्थित एक निश्चित स्थान से स्वतंत्र वैयक्तिक देवाएँ सम्पत्ति करता है, और जिस धारणाधिकार के वारे में लाभांशों की शरायती की जाती है, वह इस प्रकार के स्थायी संस्थापन अथवा निश्चित स्थान से प्रभावी रूप से सम्बन्धित है। ऐसे मामलों में, अनुच्छेद 7 अथवा अनुच्छेद 18 के उपबंध, ऐसी भी स्थिति हो, साकू होंगे।

5. जहाँ ऐसी कोई कंपनी, जो एक संविदाकारी राज्य की निवासी है, दूसरे संविदाकारी राज्य से नाम अथवा आप्र प्राप्त करती है, वहाँ वह दूसरे राज्य की नामी द्वारा अदा किए गए नामों पर विवासी भी प्रकार का कर नहीं ताका, जहाँ तक कि उस दूसरे राज्य के निवासी को ऐसे नामों को छोड़ कर, जो दूसरे राज्य के निवासी को अदा किए गए हैं अथवा जहाँ सह कि जिन धाराविनाशक राज्य में नामों की अवधारणों को जाती है, वह उस राज्य में स्थित किसी स्थायी संस्थापन अथवा किसी निवित्त अवास वाले प्रमाणी नाम में मंत्रित है, वहाँ उस दूसरे राज्य में न तो कोई कर लाना जाएगा और ना ही कंपनी के अधिकारी यार्थों पर अविवित नाम संबंधी कर लाना जाएगा, जाहे यदा किए गए लामाण अथवा प्रवर्तन नाम पूर्ण रूप से अथवा अधिक रूप से उस दूसरे राज्य में उत्तर हो वाले नाम अथवा आप के रूप में हो हों ।

## प्रनुच्छेद 12

## व्याज

1. एक संविदाकारी राज्य में उत्तर होने वाले स्थान दूसरे संविदाकारी राज्य के निवासी को अदा किए जाने वाले व्याज पर उस दूसरे राज्य में कर लगाया जाएगा ।

2. तथापि, इस प्रकार के व्याज पर उस संविदाकारी राज्य में भी जिसमें वह उद्भूत हुआ हो और उस राज्य के कानून के शान्तासार कर लगाया जा सकता है, तेकिन यदि प्राप्तकर्ता व्याज का हितभागी स्वामी है तो इस प्रकार प्रभागित कर व्याज की शक्ति रकम के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा ।

3. इस प्रनुच्छेद के पैरा 2 के उपबंधों के रहते हुए भी :

(क) जहाँ व्याज, वास्तविक बैंकिंग कारोबार चला रहे किसी बैंक को अदा किया जाता है जो दूसरे संविदाकारी राज्य का निवासी है और व्याज का निवासी स्वामी है, तो उस संविदाकारी राज्य में, जिसमें व्याज उत्तर होता है, लगाया गया कर व्याज की मात्र रकम के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा ;

(ख) जहाँ व्याज, संविदाकारी राज्यों में से किसी एक राज्य की सरकार अथवा उस राज्य के किसी राजनीतिक उत्तरांगत अथवा स्थानीय प्राधिकरण अथवा सेंट्रल बैंक अथवा निर्यात-भावात बैंक को अदा किया जाता है, तो उस राज्य में कर लही लगाया जाएगा जिसमें यह उत्तर होता है ।

4. इस प्रनुच्छेद में यथा-प्रयुक्त "व्याज" शब्द से अभिप्रैत है प्रथ्येक प्रकार के अन्य संबंधी दबावों से प्राप्त आग, जाहे वे बंधक द्वारा प्रतिभूत हों अथवा नहीं और जाहे उन्हें अत्यधिकात के लाभों में भागीदारी का अधिकार प्राप्त हो अथवा नहीं, और आत्मतोर पर, सरकारी प्रतिभूतियों से प्राप्त आग और बंधपत्रों अथवा अण-पत्रों से प्राप्त आग जिसमें ऐसी प्रतिभूतियों, बंध-पत्रों अथवा अण-पत्रों के लंबाई में प्रशान्त किये जाने वाले प्रामियम और पुरस्कार शामिल हैं ।

5. पैराग्राफ 1, 2 तथा 3 के उपबंध उस स्थिति में लागू नहीं होते, यदि व्याज का हितभागी स्वामी किसी संविदाकारी राज्य का निवासी होने से दूसरे संविदाकारी राज्य में, जिसमें व्याज उत्तर हुआ है, वहाँ स्थित किसी स्थायी संस्थापन के माध्यम से कारबार चलाता है, अथवा उस दूसरे राज्य में, वहाँ स्थित एक निवित्त स्थान से स्वतंत्र वैयक्तिक सेवाएं करता है और जिस अण-पत्र के बारे में व्याज अदा किया गया हो भले ही इस प्रकार के स्थायी संस्थापन अथवा निवित्त स्थान से लाभी अप्प हुए अधिक है । इस प्रकार के नामलों में अनुच्छेद 7 अथवा अनुच्छेद 18 के उपबंध, जैसा भी शामिल हो, लागू होते ।

6. व्याज किसी संविदाकारी राज्य में उद्भूत हुआ माना जाता, जब व्याज अदा करने वाला स्थायी वह राज्य, कोई राजनीतिक दमड़ल, कोई स्थानीय प्राधिकरण अथवा उस राज्य का कोई निवासी हो । किन्तु जहाँ व्याज अदा करने वाले व्यक्तियों का, जाहे वह संविदाकारी राज्य का निवासी हो अथवा नहीं, संविदाकारी राज्य में एक स्थानीय संस्थापन अथवा निवित्त स्थान है, जिसके संबंध में वह अग्र निवासी था जिस पर व्याज की अदायकी की गई है, और इस प्रकार का व्याज उस स्थायी संस्थापन अथवा निवित्त स्थान द्वारा वहत किया जाता है, तब उस प्रकार का व्याज उस राज्य में उद्भूत हुआ माना जाएगा, जिसमें वह स्थायी संस्थापन अथवा निवित्त स्थान स्थित है ।

## प्रनुच्छेद 13

## रायलिंग्स और तकनीकी सेवाओं के लिए फीस

1. एक संविदाकारी राज्य में उद्भूत होने वाली और दूसरे संविदाकारी राज्य के किस, निवासी को अदा की गई रायलिंग्स और तकनीकी सेवाओं के लिए वह गई फीस पर उस हाते राज्य में कर लगाया जायेगा ।

2. तथापि, इस प्रकार को रायलिंग्स और तकनीकी सेवाओं के लिए वह गई फीस पर उस संविदाकारी राज्य में भी, जिसमें वह उद्भूत हुई हो और उस राज्य के कानून के अनुसार कर लगाया जा नहेगा, तेकिन यदि प्रान्तरनी, रायलिंग्स और तकनीकी सेवाओं के लिए फीस का हितभागी स्वामी है, तो इस प्रकार लगाया गया कर, रायलिंग्स अथवा तकनीकी सेवाओं के लिए फीस की सकल रकम के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा ।

3. इस प्रनुच्छेद में यथा-प्रयुक्त "रायलिंग्स" शब्द से साहित्यक, कलात्मक अथवा वैज्ञानिक वृत्तियों के किसी भी कारी-राइट जिसमें विवेक फिल्में तथा रेडियो अथवा हार्डडिस्ट्री प्रयोग में प्रयुक्त होने वाली फिल्में अथवा टेप भी शामिल हैं, कोई पेटेन्ट, व्हापार-चित्र, डिजाइन अथवा माडल, एनान, गुप्त कार्म्सों अथवा प्रक्रिया के प्रयोग अथवा प्रयोग-विकार के लिए अथवा श्रीदोगिक, बाणिज्यिक अथवा वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग के लिए अथवा प्रयोग-विकार के लिए अथवा श्रीदोगिक, बाणिज्यिक अथवा वैज्ञानिक प्रयुक्ति से संबंधित जानकारी के लिए प्रतिकल के रूप में प्राप्त किसी भी प्रकार की अदायकी अभियेत है ।

4. इस प्रनुच्छेद में यथा-प्रयुक्त "तकनीकी सेवाओं के लिए फीस" पद गे प्रवर्त्यात्, तकनीकी अथवा परामर्शदात्री स्वरूप की सेवाओं के लिए, जिनमें तकनीकी अथवा प्राप्त कार्म्सों की सेवाओं भी व्यवस्था करता भी शामिल है, प्रतिकल के रूप में अशारियां करने वाले व्यक्तियों के लिए फीसी कारी-राइट की अथवा अप्राप्तियां अर्थात् तथा प्रनुच्छेद 15 में वर्णित स्वतंत्र वैयक्तिक सेवाओं के लिए किसी व्यक्ति को गई अदायकियों से जित्त, किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार की गई अदायकियों अभियेत है ।

5. इस प्रनुच्छेद के पैरा 1 तथा 2 के उपबंध उस स्थिति में लागू नहीं होते, यदि रायलिंग्स अथवा तकनीकी सेवाओं के लिए फीसों का इतिहासी स्वामी, जो एक संविदाकारी राज्य का निवासी है, और दूसरे संविदाकारी राज्य में, जिसमें रायलिंग्स अथवा तकनीकी सेवाओं के लिए फीस उद्भूत होती है, वहाँ पर स्वित स्थायी संस्थापन के माध्यम से अथवा वहाँ पर स्वित किसी विश्वित स्थान से उस दूसरे राज्य में स्वतंत्र वैयक्तिक सेवाएं करता है, और जिस प्रतिकल के लिए फीसी कारी-राइट की अथवा अप्राप्तियां अर्थात् तकनीकी सेवाओं के लिए फीसी कारी-राइट की जाती हैं, ऐसे स्थायी संस्थापन अथवा विश्वित स्थान के साथ प्रमाणी रूप से संबंधित है । ऐसे भागों में, प्रनुच्छेद 7 अथवा प्रनुच्छेद 18 के उपबंध, जैसा भी शामिल हो, लागू होते ।

8. एक संविदाकारी राज्य में रायलिट्ट्या और तकनीकी सेवाओं के लिए फौज उद्भूत हुई मानी जाएंगी, जब रायलिट्ट्या और फौस अदा करने वाला स्वयं वह राज्य, कोई राजनीतिक उपर्युक्त, कोई स्थानीय प्राधिकरण अथवा उस राज्य का कोई निवारी हो। परन्तु, जहाँ रायलिट्ट्या अथवा नकनीकी सेवाओं के लिए फौस अदा करने वाले व्यक्ति का, जहाँ वह संविदाकारी राज्य का निवासी हो अब वह नहीं, संविदाकारी राज्य में कोई स्थायी संस्थापन अथवा कोई निश्चित स्थान हो जिनके संबंध में अवाय-गियों करने का व्यवहार किया गया था और उस स्थायी संस्थापन अथवा निश्चित स्थान प्रारंभ अवायगियों को जाते हों, तब रायलिट्ट्या अवधा तकनीकी सेवाओं के लिए फौस उस संविदाकारी राज्य में उद्भूत हुई मानी जाएंगी, जिसमें स्थायी संस्थापन अथवा निश्चित स्थान स्थित है।

7. जहाँ प्रशारकर्ता और हितवारी स्थामी के बीच अववा उन शीतों और प्रत्यक्षित के बीच विशेष प्रकार का संबंध होने के कारण, रायलिट्ट्यों अववा तकनीकी सेवाओं के लिए अदा की गई की सकों रकम ऐसे प्रयोग, अधिकार अववा सूचना को ध्यान में रखते हुए, जिसके लिए, उनकी अवायगी की गई है, उस रकम से यद जाती है, जिसके लिये इस प्रकार के संबंध नहीं होने की स्थिति में अदा करने वाले और प्राप्तकर्ता के बीच सहमति ही गई होती, वहाँ इस ग्रन्तुलेद के उपबंध के बाल अन्तिम वर्षित रकम पर सागू होते हैं। ऐसे मामलों में, अधिक अदा की गई स्थप पर, इस अभिसमय के प्रत्यक्ष उत्तरों को शात में रखते हुए, प्रत्येक भवित्वाकारी राज्य के कानून के अनुसार कर साया जाता।

अनंचलेष । 4

## पूर्वागत मनिलाभ

1. अनुच्छेद 6 के प्रेरणाक 2 में यथा परिभासित प्रबल संभति के अंतरण से अथवा ऐसी कंपनी के शंखरों के अंतरण से, जित्तों परि- संभतियों में मुच्य रूप से प्रबल संभति सम्मिलित हो, होते वाने अभिनाम, उस राज्य में कराधेय हो भक्तें जिसमें ऐसी गंभीर स्थिति है।

2. ऐसा चल संपत्ति के अंतरण से होने वाले अभिलाषों पर, जो उस स्थायी संस्थापन की व्यापारिक संवृत्ति का एक हिस्सा है और जो एक संविदाकारी राज्य के उद्यम को दूसरे संविदाकारी राज्य में है, अथवा किसी निश्चित स्थान से संबंधित ऐसा चल संपत्ति के अंतरण से होने वाले अभिलाष पर, जो एक संविदाकारी राज्य के निवासी को दूसरे संविदाकारी राज्य में अवासायिक सेवाओं के निष्पादन के प्रयोगनार्थ उपलब्ध है, जिसमें एक स्थायी संस्थापन (अकेले अथवा धूर्ण उद्यम के साथ) अथवा ऐसे निश्चित स्थान के अंतरण से होने वाले अभिलाष भी शामिल हैं, उस दूसरे राज्य में कर लग सकेगा ।

3. पैराग्राफ 2 के उपबंधों के होते हुए भी, एक संविदाकारी राज्य के किसी उच्चम द्वारा ऐसे जलपोती तथा बायुयानों के अन्तरण से, जिन्हें ऐसा उच्चम अन्तर्राष्ट्रीय यातायात के अन्तर्गत परिवासित करता है तथा इस प्रकार के अलपोती तथा बायुयानों के संचालन से संबंधित अल संपत्ति से प्राप्त भविष्यालभ के बहुत उच्च राज्य में कराधेष्ट हो सकेंगे।

4. इस धनुषलिंग के पूर्ववर्ती वैदाग्राकों में उल्लिखित संपत्ति से विश्व किसी भी संपत्ति के भ्रंतरप्प से होने वाले ग्रभिलास, केवल उस संविदाकारी राज्य में ही करावेय होंगे, जिसमें ग्रन्तरणकर्ता एक निवासी है।

5. "प्रभृतरण" शब्द से अभिभेत है ऐसे संविवाकारी राज्य के कानून के प्रत्यक्षरात्र अभृतरण जिसमें सर्वाधित मंपालि विषय है।

भानुच्छेय 15

स्वतंत्र वैयक्तिक सेवाये

1. ऐसे घटित बारा, जो एक संविदाकारी राज्य का निवासी है, शावासाधिक मेंशियरों प्रथमा हसी प्रकार के शन्य स्वतंत्र कार्यकलापों में नियमावृत्त से प्राप्त धार्य पर केवल उस राज्य में ही हो कर लगेगा जब तक कि उसे भवने कार्यक लापों को सम्प्रभ करने के प्रयोगनार्थी उग दूसरे राज्य में एक निश्चित स्थान नियमित स्पृ से उपलब्ध नहीं हो। यदि उसके पास ऐसा निश्चित स्थान है, तो केवल उनीं धार्य पर ही उस दूसरे संविदाकारी राज्य में कर सकेगा, जिसनों कि उस निश्चित स्थान के कारण हुई मानी जा सकती हों।

2. “अद्यात्मायिक मेयार्” पढ़ में विशेषज्ञ व्यक्तिगत वैज्ञानिक, साहित्यिक कलात्मक, शैक्षणिक अथवा प्रशिक्षण संरचनाएँ कार्यकृताता तथा चिकित्सकों, शल्य-चिकित्सकों, वकीलों, इंजीनियरों, वास्तुकारों, इन्तक्षित विद्यार्थियों और लेखाकारों के स्वतंत्र कार्यकलाप शामिल हैं।

માત્રાંકન્દ્ર 16

## पराश्रित वैयक्तिक सेवाये

1. ग्राम्यछेद 17, 19, 20, 21 और 22 के उत्तरवर्ती के प्रश्नवर्ती रहने द्वारा, एक संविदाकारी राज्य के किसां नियोजन को, किसी नियोजन के संबंध में प्राप्त धरतन, मजदूरी तथा इसी प्रकार के अन्य पारिवर्त्यक पर कर केवल उसी राज्य में लापाया जा सकेगा, जब तक कि उसका नियोजन दूसरे संविदाकारी राज्य में न हो। यदि नियोजन दूसरे संविदाकारी राज्य में हो तो उसी प्राप्त पारिवर्त्यक पर उस दूसरे राज्य में कर दग सकेगा।

2. पेरामार्फ 1 के उत्तरांशों के द्वारे दूष भी, एक संविदाकारी राज्य के किस निवासी को, दूसरे संविदाकारी राज्य में किए गए नियोपन के संबंध में प्राप्त परिस्थितिक परकर के बन प्रबंधितिवित राज्य में ही लगेगा यदि:

(क) प्राप्तकर्ता संबंधित “पिछले वर्ष” अथवा “कारपान वर्ष” में, जैसी भी स्थिति हो, कुल मिलाकर 183 दिन तक प्रतिक्रिया की प्रधान प्रविधि अथवा प्रविधियों के लिए दूसरे राजा में सौजन्य रहा हो ; और

(x) पारिश्रमिक की अवासगी ऐसे नियोजक द्वारा अवधार की जाएं से को गई हो जो दूसरे राज्य का निवासी नहीं है : और

(ग) परिचयिक किसी ऐसे स्थायी संस्थान अधिका निश्चित धारा द्वारा बहन नहीं किया गया हो जो कि उस नियोजक का हमें राय में है।

3. इस अनुच्छेद के पूर्ववर्ती उगावदों के होसे हुए भी, एक संविशासकी राज्य के किसी निवासी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय यातायात में संदर्भित किसी जलप्रीत पर अवधा यातायात पर किए गए तियोजन के संबंध में प्राप्त पारिष्कारिक पर कर के बहुत उच्ची राज्य में लगेगा।

અનુષ્ઠાન ૧૮

निवेदकों की फोस तथा उच्च स्तरीय प्रबन्धकों व अधिकारियों का परिवर्तनिक

1. एक संविदाकारी राज्य के किसी निवासी द्वारा किसी ऐसी कामनी के निदेशक मंडल के सरक्य को हैमियत से, जो दूसरे संविदाकारी राज्य की निवासी है, प्राप्त निदेशक की फीस तथा इसी प्रकार की प्राप्त प्रदानागियों पर उस दूसरे संविदाकारी राज्य में कर लग सकेगा ।

2. एक संविदाकारी राज्य के किसी निवासी द्वारा, किसी ऐसी कंपनी के उच्चस्तरीय प्रबंधनीय पद के भविकारी के रूप में, जो दूसरे संविदाकार राज्य का निवासी है, प्राप्त बेतन, मंजदूरी तथा इसी प्रकार के दूसरे पारिश्रमिक पर अनुबुभूते राज्य में कर लग सकेगा।

४

## अनुच्छेद 18

## कलाकार और खिलाड़ी

1. अनुच्छेद 15 के उपबंधों के होते हुए भी, एक संविदाकारी राज्य के किसी निवासी द्वारा, लोक मनोरंजनकर्ताओं जैसे वियेटर, चलचित्र, रेडियो अथवा दूरदर्शन कलाकार अथवा संगीतकार अथवा खिलाड़ी के रूप में अपने बैकलेक कर्मी से, जिन्हें दूसरे संविदाकारी राज्य में किया जाता है, प्राप्त आय पर उसी राज्य में कर लग सकेगा।

2. जहाँ मनोरंजनकर्ता अथवा खिलाड़ी द्वारा उसके वैयक्तिक क्रियाकलापों के संबंध में प्राप्त आय उसमें मनोरंजनकर्ता अथवा खिलाड़ी को प्राप्त नहीं हो अपिनु किसी अन्य व्यक्ति को प्राप्त हो वहाँ उम आय पर, अनुच्छेद 7 और 15 के उपबंधों के होते हुए भी, उस संविदाकारी राज्य में कर लग सकेगा जिसमें मनोरंजनकर्ता अथवा खिलाड़ी द्वारा ऐसे क्रियाकलाप किये जाते हैं।

3. ऐराग्राम 1 और 2 के उपबंध मनोरंजनकर्ताओं अथवा खिलाड़ियों द्वारा एक संविदाकारी राज्य में किये गये क्रियाकलापों से प्राप्त पारिश्रमिक अथवा आम, बेतन, मंजदूरी तथा इसी प्रकार की आय पर लागू नहीं होंगे, यदि उस राज्य में उनकी यात्रा को, दूसरे संविदाकारी राज्य, किसी राजनीतिक उपर्युक्त अथवा उस के विदी स्थानीय प्राधिकरण की सार्वजनिक निधियों से आधिक रूप ने सहायता की जाती है।

## अनुच्छेद 19

## पेशन

अनुच्छेद 20 के ऐराग्राम 2 और 3 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, एक संविदाकारी राज्य के किसी निवासी को, पिछले नियोजन के प्रतिकल में प्रदत्त वेतन तथा इसी प्रकार के पारिश्रमिक पर केवल उसी राज्य में कर लग सकेगा।

## अनुच्छेद 20]

## सरकार के कार्य]

1. (क) एक संविदाकारी राज्य अथवा एक राजनीतिक उपर्युक्त अथवा उसके विदी स्थानीय प्राधिकरण द्वारा किसी व्यक्ति को, उस राज्य अथवा उपर्युक्त अथवा प्राधिकरण के लिए की गई सेवाओं के संबंध में अवा की गयी पेशन से भिन्न पारिश्रमिक पर केवल उसी राज्य में कर लग सकेगा।

(ख) तथापि, ऐसे पारिश्रमिक पर केवल उस दूसरे संविदाकारी राज्य में ही कर लग सकेगा यदि सेवाएँ उस राज्य में की जाती हैं और अपिनु उस राज्य का निवासी है जो:

(i) उस राज्य का राष्ट्रिक है; अथवा  
(ii) सेवाएँ प्रदान करते के प्रयोजन माम के लिए उस राज्य का निवासी नहीं बना था।

(ग) एक संविदाकारी राज्य अथवा एक राजनीतिक उपर्युक्त अथवा उसके विदी स्थानीय प्राधिकरण के लिए की गई सेवाओं के लिए उस राज्य अथवा उपर्युक्त अथवा प्राधिकरण द्वारा किसी व्यक्ति को अवा की गई अथवा उनके द्वारा निमित निधियों ने की गई पेशन पर उसी राज्य में कर लग सकेगा।

(घ) तथापि, ऐसी पेशन पर दूसरे संविदाकारी राज्य में केवल तब कर लग सकेगा यदि वह अपिनु उस राज्य का निवासी है और राष्ट्रिक है।

3. अनुच्छेद 16, 17 और 19 के उपबंध, एक संविदाकारी राज्य अथवा किसी राजनीतिक उपर्युक्त अथवा उसके किसी स्थानीय प्राधिकरण द्वारा उसमें गये कारबाह के संबंध में कोई नई सेवाओं के बारे में प्राप्त पारिश्रमिक और पेशन पर लागू होंगे।

4. इस अनुच्छेद के ऐराग्राम 1 के उपबंध, कोरिया के मामले में, बैक बैक कोरिया, नियांत-मायात बैक बैक कोरिया तथा कोरिया आपार संबंधित नियम द्वारा उस भारतीय रिजर्व बैक तथा भारतीय नियांत-मायात बैक द्वारा और संविदाकारी राज्यों के सभी प्राधिकारियों द्वारा मान्यता प्रदान किये गये संगठनों द्वारा तथा उनकी सहमति से अदा किये गये पारिश्रमिक अथवा पेशनों के संबंध में उसी प्रकार लागू होंगे।

## अनुच्छेद 21

## विद्यार्थियों तथा प्रशिक्षितों द्वारा प्राप्त अदायगियाँ

1. किसी विद्यार्थी अथवा आपारायिक प्रशिक्षण को, जो दूसरे संविदाकारी राज्यों में से एक राज्य का निवास है अथवा था, और जो मात्र अपनी शिक्षा अथवा प्रशिक्षण के प्रयोजनार्थ उस दूसरे राज्य में उपस्थित है, उस दूसरे राज्य में निभलितित पर कर से छूट प्राप्त होगी:

(क) उसके भरग-पोषण, गिजाअ अथवा प्रशिक्षण के प्रयोजनार्थ उस संविदाकारी राज्य से बाहर रहने वाले व्यक्तियों द्वारा उसे को गई अदायगियाँ; तथा

(ख) उस दूसरे राज्य में “किसी भी पूर्ववर्ती वर्ष” अथवा “कारधान वर्ष” में जैसी भी स्थिति हो, रोजगार से प्राप्त पारिश्रमिक पर, जो उस लाभ और सात सौ दूनार कोरियाई बोन प्रशिक्षण उसके सम्पुर्ण भारतीय सुधा से अधिक नहीं हो, बर्त कि ऐसा रोजगार उसके अध्ययन से सीधे संबंधित हो अथवा उसके भरग-पोषण के लिए किया गया हो।

2. इस अनुच्छेद का लाभ, केवल ऐसी प्रवासी तक के लिए उपलब्ध होगा जो शिक्षा अथवा प्रशिक्षण को पूरा करने के लिए उचित प्रशिक्षण साधारणता प्रयोक्तित हो, परन्तु किसी भी हालत में, किसी भी व्यक्ति को इस अनुच्छेद का लाभ, उस दूसरे संविदाकारी राज्य में पहुँचने की तारीख से लगातार पांच वर्ष से अधिक की अवधि के लिए प्राप्त नहीं होगा।

## अनुच्छेद 22

## प्राध्यापक, प्राध्यापक तथा शोध छात्र

1. कोई व्यक्ति जो दूसरे संविदाकारी राज्य का द्वारा करने से तत्काल पूर्व एक संविदाकारी राज्य का निवासी है अथवा था, और जो, उस दूसरे राज्य में सभी प्राधिकारियों द्वारा मान्यता प्रदान किये गये किसी भी विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय अथवा उसी प्रकार की दूसरी शैक्षिक संस्थाओं के प्राध्यापक पर, उस दूसरे राज्य में ऐसी शैक्षिक संस्थाओं में केवल अध्यापन अथवा शोध वार्ता की गई अथवा उनके द्वारा निमित निधियों द्वारा दी गई पेशन पर उसी राज्य में कर लग सकेगा।

2. यह अनुच्छेद शोध वार्ता की प्राप्त आय पर लागू नहीं होगा, यदि इस प्रकार का शोध वार्ता मुख्यतः किसी विभिन्न व्यक्ति अथवा व्यवित्रियों के लिए किया जाता है।

## अनुच्छेद 23

## अन्य आय

‘एह अधिकारी राज्य के किसी निवासी की आय को उन मर्दों पर, जहाँ कहीं उद्युक्त होती हो, जिन पर उस अभियान के पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में विवार नहीं किया गया है, उस द्वारे राज्य में ही कर लग सकेगा।

## अनुच्छेद 24

## दोहरे कराधान का अपाकरण

1. कोरिया के निवासी के मामले में, दोहरे कराधान का परिवार निम्न प्रकार से किया जाएगा :

कोरिया से मिश्र किसी भी देश में संदेश कर का कोरियाई कर के प्रति जाता जाना के रूप में शूट के संबंध में कोरियाई कर का नाम के नावांचों के अधीन रहते हुए (जिसका इसके मामार्य सिद्धान्तों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता), भारतीय कानूनों के अन्तर्गत यहाँ इस अभियान के अनुसार संदेश “भारतीय कर (लाभांश के मामले में, उस लाभों के संबंध में देश के कोरियाई कर के द्वारा विनाम से लाभांश प्रदान किया जाता है) प्रत्यक्ष अवयव कटीती द्वारा, भारत के प्रधान प्रेसों से प्राप्त आय के संबंध में, उस आय के संबंध में संदेश द्वारा कोरियाई कर के प्रति जाता-जाना के रूप में अनुसार दी जाएगी। साथापि, यह जाता-जाना, कोरियाई कर के उस अनुपात से अधिक नहीं होगा जो भारत के अद्वार के लोडों से प्राप्त आय का सम्पूर्ण आय पर कोरियाई कर के साथ हो।

2. पैरामाफ 1 के प्रयोजन के लिए, ‘संदेश भारतीय कर’ पद में भारतीय कर की उस रकम को सम्मिलित माना जाएगा जो भारतीय कर कानूनों के अनुसार उस स्थिति में संदेश होती, यदि उस पर भारत में आधिक विकास के संबंधित के लाए प्रोत्याहनों से संबंधित उन कानूनों के अनुभार भारतीय कर की छूट अवयव कटीत, प्राप्त नहीं होती जो इस अभियान पर हस्ताक्षर किये जाने की तारीख को लागू थे अवयव अन्य उपर्युक्त जिन्हें संविदाकारी राज्यों के सभाम प्राधिकारियों की सहमति से उस कानूनों में संशोधन अवयव परिवर्तन के लिए भारत में बाब में लागू किया जाए परन्तु यह कि इस पैरामाफ में उल्लिखित कर की रकम :

(क) अनुच्छेद 11 के पैरामाफ 2(क) में उल्लिखित लाभांशों के मामले में ऐसे लाभांशों की कुल रकम के 15 प्रतिशत के बाबाबर की रकम और, अनुच्छेद 11 के पैरामाफ 2(ख) में उल्लिखित लाभांशों के मामले में ऐसे लाभांशों की कुल रकम के 20 प्रतिशत के बाबाबर की रकम;

(ख) अनुच्छेद 12 के पैरामाफ 2 में उल्लिखित व्याज के मामले में, ऐसे व्याज की कुल रकम की 15 प्रतिशत रकम सम्म अनुच्छेद 13 के पैरामाफ 3(क) में उल्लिखित व्याज के संबंध में ऐसे व्याज की कुल रकम की 10 प्रतिशत रकम; तथा

(ग) अनुच्छेद 13 के पैरामाफ 2 में उल्लिखित व्याज के मामले में, ऐसी रायस्तियों की कुल रकम की 15 प्रतिशत रकम से अधिक नहीं होगी।

3. भारत के निवासी के मामले में, दोहरे कराधान का परिवार अन्य प्रकार से किया जाएगा।

भारत से मिश्र किसी भी देश में संदेश कर को भारतीय हर के प्रति जमा के रूप में शूट से संबंधित भारतीय कर कानून के उपांचों के अधीन रहते हुए (जिसका इसके सामान्य मिश्रान्तों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता) कोरिया के कानूनों के अन्तर्गत तथा इस अभियान के अनुसार कोरिया के अद्वार के लोडों में प्राप्त आय के संबंध में, प्रत्यक्ष अवयव कटीत, द्वारा संदेश कोरियाई कर को (लाभांशों के मामले में, ऐसे लाभों के संबंध में संदेश कर को छोड़कर जिसमें से लाभांश की अद्वारी की जाती है) उस आय के संबंध में संदेश भारतीय कर के प्रति जमा के रूप में माना जाएगा। तथापि यह जमा भारतीय कर के उस अनुपात से अधिक नहीं होगी जो कोरिया के अंदर के लोडों से प्राप्त आय का संगूण आय पर भारतीय कर के साथ हो।

4. पैरामाफ 3 के प्रयोजनों के लिए “संदेश कोरियाई कर” पद में कोरिया कर की उस रकम को सम्मिलित माना जाएगा जो कोरियाई कर कानूनों के अनुसार उस स्थिति में संदेश होती यदि उस पर कोरिया में आधिक विकास के संबंधित के लिए प्रतिशतहाफों से संबंधित उस कानून के अनुसार कोरियाई कर की शूट अवयव बाबौन; प्राप्त सही होती जो इस अभियान पर हस्ताक्षर किये जाने की तारीख को लागू थे अवयव अन्य उपर्युक्त जिन्हें संविदाकारी राज्यों ने सभाम प्राधिकारियों की सहमति से उस कानूनों में संशोधन अवयव परिवर्तन के लिए बाब में कोरिया में लागू किया जाए परन्तु यह कि इस पैरामाफ में उल्लिखित कर की रकम :

(क) अनुच्छेद 11 के पैरामाफ 2(क) में उल्लिखित लाभांशों के मामले में ऐसे लाभांशों की कुल रकम की 15 प्रतिशत रकम, तथा अनुच्छेद 11 के पैरामाफ 2(ख) में उल्लिखित लाभांशों के बाबर में ऐसे लाभांशों की कुल रकम की 20 प्रतिशत रकम;

(ख) अनुच्छेद 12 के पैरामाफ 2 में उल्लिखित व्याज के मामले में, ऐसे व्याज की कुल रकम की 15 प्रतिशत रकम तथा अनुच्छेद 12 के पैरामाफ 3(क) में उल्लिखित व्याज के मामले में ऐसे व्याज की कुल रकम की 10 प्रतिशत रकम; तथा

(ग) अनुच्छेद 13 के पैरामाफ 3 में उल्लिखित व्यापकारी रायस्तियों के मामले में ऐसी रायस्तियों की कुल रकम की 15 प्रतिशत रकम से अधिक नहीं होगी।

## अनुच्छेद 25]]

## [सम-व्यवहार]

1. एक संविदाकारी राज्य के राष्ट्रियों पर दूसरे संविदाकारी राज्य में ऐसी कराधान अवयव तरत्बंधी ऐसी कोई धरेका लागू नहीं की जाएगी जो उस कराधान से और उस संविदाकारी से भिन्न अवयव अधिक कष्टकर हो जो उस दूसरे राज्य के राष्ट्रियों पर वैसी ही परिवर्तनों में लागू होती है भयवा हो सकती है।

2. एक संविदाकारी राज्य के निवासी उच्च द्वारा दूसरे संविदाकारी राज्य में खाली जा रहे स्थापी संस्थान पर, उस दूसरे राज्य में ऐसी कोई धरेका लागू नहीं लाभांश जाएगा जो उस दूसरे राज्य में वैसे ही कार्यकलाप करने वाले उद्योगों पर खाली जाने वाले कराधान से भिन्न अनुकूल हों। इस उपर्युक्त का यह अर्थ नहीं लाभांश जाएगा कि वह एक संविदाकारी राज्य को, दूसरे संविदाकारी राज्य के निवासीयों को, लागिरक प्रतिष्ठा अवयव पारिवारिक उत्तराधिकारों के गारंग कराधान के प्रवोजनाये कोई ऐसी धरेका लाभांश जाएगा कि वह एक संविदाकारी राज्य के निवासीयों को ‘अनुच्छेद 13’ के लिए व्याप्ति, करता है जो वह स्वयं के निवासीयों को ‘अनुच्छेद 13’ के लिए व्याप्ति, करता है।

3. जिन मामलों में अनुच्छेद 19 अनुच्छेद 12 का पैरा 7 अथवा अनुच्छेद 13 का पैरा 7 लागू होते हैं, उन्हें छोड़कर व्याज, रायर्टिंग तथा अन्य अदायगियों जो एक संविदाकारी राज्य के किसी उद्यम द्वारा दूसरे संविदाकारी राज्य के किसी निवासी को की गई हों वे इस प्रकार के उद्यम के केर लगते बोग्य लाभों का निर्धारण करने के प्रयोजन के लिए कहीं शर्तों पर कठीन पाते योग्य होंगी जैसे कि वे प्रथमोलिंगित राज्य के किंवदन्तियों को जड़ा की गई हों।

4. एक संविदाकारी राज्य के उद्यमों पर, जिनकी पूँजी पूर्णतः अथवा अतः दूसरे संविदाकारी राज्य है एक अथवा एक में अधिक निवासीयों के प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षतः स्वामित्व अथवा नियंत्रण में है, प्रश्नोक्त संविदाकारी राज्य में कोई ऐसा कराधान अथवा तत्संबंधी कोई ऐसी अपेक्षा लागू नहीं की जाएगी जो उस कराधान और संबंधित अदायगियों में चिन्न अथवा अधिक कष्टकर हों, जो उस प्रथमोक्त राज्य के अन्य वैसे ही उद्यमों पर लागू होती है अथवा हो सकती है।

5. इस अनुच्छेद के उपबंध अनुच्छेद 2 के उपबंधों के होते हुए भी प्रत्येक प्रकार के तथा किसी के कर्त्ता पर लागू होते हैं।

अनुच्छेद 26

## पारस्परिक करार कार्यविधि

1. जहाँ एक संविदाकारी राज्य का निवासी यह समझता है कि एक अथवा दोनों संविदाकारी राज्यों के कार्यों के कारण, उस पर जो कर लगाया जाता है अथवा लगाया जाएगा, वह इस अभिसमय के अनुरूप नहीं है, तो वह, इन राज्यों के राष्ट्रीय कानूनों द्वारा उपबंधित उपभानों के होते हुए भी अपना मामला उस संविदाकारी राज्य के, जिसका कि वह निवासी है अथवा, यदि उसका मामला अनुच्छेद 25 के पैराग्राफ 1 के अन्दर आता है तो वह उस संविदाकारी राज्य के, जिसका कि वह राष्ट्रिक है, सक्षम प्राधिकारी को प्रस्तुत कर सकता है। यह मामला, उस कार्यवाही की पहली अधिसूचना से तीन वर्ष के भीतर अवश्य प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिसके कारण इस अभिसमय के प्रतीकूल कराधान हुआ है।

2. सक्षम प्राधिकारी, यदि उसे आपत्ति उचित लगे और यदि वह स्वयं किसी उपयुक्त हल पर पहुँचने में असमर्थ हो तो वह ऐसे कराधान के परिहार की दृष्टि से जो इस अभिसमय के अनुरूप नहीं है, दूसरे संविदाकारी राज्य के सक्षम प्राधिकारी की परस्पर सहमति द्वारा उस मामले को हल करने का प्रयास करेगा। जो भी करार हो गया हो उसे संविदाकारी राज्यों के राष्ट्रीय कानूनों में निहित किसी भी समय सीमा के होते हुए भी कार्यान्वयन किया जाएगा।

3. इस अभिसमय की व्याख्या करने अथवा इसे लागू करने में यदि कोई कठिनाइयां अवश्य शंकाएं उत्पन्न हो तो, संविदाकारी राज्यों के सक्षम प्राधिकारी उन्हें पारस्परिक सहमति से हल करने का प्रयास करेगे। वे ऐसे मामलों में भी दोहरे कराधान के अवश्यकता के लिए परन्तु परामर्श कर मर्हमे जिसकी व्यवस्था इस अभिसमय में नहीं है।

4. पूर्वगत पैराग्राफ के अंतर्गत महसूनि के प्रयोजनार्थ संविदाकारी राज्यों के मक्षम प्राधिकारी एक दौरे के साथ सीधे पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। जब किसी ममतापैरा पर पहुँचने के लिये विचारों का भौतिक आदान-प्रदान करना उपयुक्त प्रतक हो तो ऐसा आदान-प्रदान करना एक आयोग के सम्मिलन से किया जा सकता है जिसमें संविदाकारी राज्यों के मक्षम प्राधिकारियों के प्रतिनिधि हों।

अनुच्छेद 27

## सूचना का आदान-प्रदान

1. संविदाकारी राज्यों के प्राधिकारी ऐसी सूचना का (जिसमें दमावेज भी शामिल है) आदान-प्रदान करेंगे, जो इस अभिसमय के उपबंधों से अथवा संविदाकारी राज्यों के आंतरिक कानूनों के उन उपबंधों को लागू करने के लिये आवश्यक हों, जो इस अभिसमय के अधीन आने वाले करों से, खास तौर पर जात्रसाजी अथवा इस प्रकार के करों के अपवर्जन को रोकने से संबंधित हैं जहाँ तक कि उनके अधीन लगाये जाने वाले कर इस अभिसमय के प्रतिकूल न हों। सूचना का आदान-प्रदान अनुच्छेद 1 द्वारा प्रतिवर्तित नहीं है। एक संविदाकारी राज्य द्वारा प्राप्त की गई कोई भी सूचना उसी प्रकार गुप्त मानी जाएगी, जिस प्रकार उस राज्य के आंतरिक कानूनों के अंतर्गत प्राप्त की गई सूचना मानी जाती है। लेकिन यदि सूचना, बंदेशन करने वाले राज्य में मूल हस्त से गुप्त मानी जाती है, तब वह केवल ऐसे व्यक्तियों अथवा प्राधिकारियों का (जिसमें व्यायालय और प्रशासनिक निकाय शामिल हैं) प्रकट की जाएगी जो उन करों के निपोरण अथवा वसूली, उनके संबंध में प्रत्यांत्रित अथवा अन्तर्प्रस्तुत हों, जो इस अभिसमय के विषय हैं। ऐसे व्यक्ति अथवा प्राधिकारी सूचना का उपयोग केवल ऐसे ही प्रयोजनों के लिए करने पश्चुत वे इस सूचना का मार्वर्जनिक तौर पर न्यायालय की कार्यताहियों अथवा न्यायिक नियमों में प्रकट कर सकेंगे। नाम प्राधिकारी विचार-विमर्श द्वारा उन मामलों के संबंध में समुचित जरूरी तरीके तथा तकनीक विकसित करेंगे जिनके संबंध में सूचना का इस प्रत्यार का आदान-प्रदान किया जाएगा जिसमें जहाँ उत्तिन हो, कर-परिहार के बारे में सूचना का आदान-प्रदान भी शामिल है।

2. किसी भी स्थिति में पैराग्राफ 1 के उपबंधों का वह अर्थ नहीं लगाया जाएगा, जो एक संविदाकारी राज्य को निम्नलिखित के लिये बाध्य करे:

(क) एक अथवा दूसरे संविदाकारी राज्य की विधियों और प्रशासनिक प्रयोग से हटकर प्रशासनिक उपाय करना।

(ख) ऐसी सूचना देना जो एक अथवा दूसरे संविदाकारी राज्य की विधियों के अंतर्गत अथवा प्रशासन की सामान्य स्थिति में प्राप्त किए जाने योग्य नहीं है।

(ग) ऐसी सूचना देना, जिसमें कोई व्यायारिक-व्यवसायिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक अथवा व्यवसाय संबंधी गुप्त भेद अथवा व्यायारिक प्रक्रिया अथवा सूचना प्रकट होती हो, जिसको प्रकट करना सरकार की नीति के प्रतिकूल हो (आईए पब्लिक)।

अनुच्छेद 28

## अन्तर्राष्ट्रीय अभिकर्ता तथा कोंसल्टी अधिकारी

इस अभिसमय के अंतर्राष्ट्रीय विधि के सामान्य नियमों के अंतर्गत अथवा विजेप करने के प्रावधानों के अंतर्गत, राजनयिक अभिकर्ताओं तथा कोंसल्टी अधिकारियों के रज्य तथा विभाग विजेप अधिकारों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अनुच्छेद 29

## श्रवनते

1. इस अभिसमय के अभियुक्त को जाएगी जब अभियुक्त दस्तावेजों का सिंगल में अथवा अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान किया जाएगा।

यह अधिसंयम अधिकृष्ट के दस्तावेजों के आकात-प्रवात को सतीष के बारे 30वें तिथि प्रवर्तित होगा।

## 2. इस अधिसंयम का :

### (क) कोरिया में :

- (i) जिस कैलेण्डर वर्ष में हम अधिसंयम पर आद्यक्षर हुए हों उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष के जनवरी के पहले दिन को अथवा उसके बाद अनिवासियों को अदा की गई अथवा उनके खाते जमा की गई रकमों पर शोत पर रोके गए कर के संबंध में, और
- (ii) जिस कैलेण्डर वर्ष में इस अधिसंयम पर आद्यक्षर हुए हों उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष के जनवरी के पहले दिन को अथवा उसके बाद शुरू हुई पूर्ववर्ती वर्षों के नियम अन्य करों के संबंध में

प्रधान पड़ेगा।

### (ख) भारत में :

- (i) जिस कैलेण्डर वर्ष में इस अधिसंयम पर आद्यक्षर हुए हों उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष के अप्रैल के पहले दिन को अथवा उसके बाद अनिवासियों को अदा की गई अथवा उनके खाते जमा की गई रकमों पर शोत पर रोके गए कर के संबंध में, और
- (ii) जिस कैलेण्डर वर्ष में इस अधिसंयम पर आद्यक्षर हुए हों उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष के अप्रैल के पहले दिन को अथवा उसके बाद शुरू हुई पूर्ववर्ती वर्षों के नियम अन्य करों के संबंध में, प्रधान पड़ेगा।

## अनुच्छेद 30

### समाप्ति

यह अधिसंयम अनिवासित काल तक लापू रहेगा, परन्तु संविदाकारी शर्यों में से कोई भी राज्य इसके लागू होने की तारीख से पांच वर्षों की अधिक की समाप्ति के बाद शुरू होने वाले किसी कैलेण्डर वर्ष में 30 जून को अथवा उस से पहले, राजनायिक माध्यमों से दूसरे संविदाकारी राज्य को समीक्षित का निविद नोटिस दे नके गा और ऐसी स्थिति में यह अधिसंयम :

### (क) कोरिया में :

- (i) जिस कैलेण्डर वर्ष में समाप्ति का नोटिस दिया जाता है उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष में जनवरी के पहले दिन को अथवा उसके बाद अनिवासियों को अदा की गई अथवा उनके खाते जमा की गई रकमों पर शोत पर रोके गए कर के संबंध में; और
- (ii) जिस कैलेण्डर वर्ष में समाप्ति का नोटिस दिया जाता है उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष में अनवर्ती के पहले दिन को अथवा उनके बाद शुरू होने वाले काराधान वर्षों के नियम अन्य करों के संबंध में।

### (ख) भारत में :

- (i) जिस कैलेण्डर वर्ष में समाप्ति का नोटिस दिया जाता है उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष में अप्रैल के पहले दिन को अथवा उसके बाद अनिवासियों को अदा की गई अथवा उनके खाते जमा की गई रकमों पर शोत पर रोके गए कर के संबंध में; और

(ii) जिस कैलेण्डर वर्ष में समाप्ति का नोटिस दिया जाता है उसके प्रगते परवर्ती कैलेण्डर वर्ष में अप्रैल के पहले दिन को अथवा उसके बाद अनिवासियों को अदा की गई अथवा उनके खाते जमा की गई रकमों पर शोत पर रोके गए कर के संबंध में, निप्रभावी हो जाएगा।

जिनके माइल में इसके नियम विधिवत् प्राधिकृत अधोहस्तान्त्रिय ने हम अधिसंयम पर कृत्यान्वय लिया है।

नई लिली में आज वर्ष एक हजार तीन सौ पिंडामी के जुआई मात्र के 19 वें दिन को हिन्दी, कोरियाई तथा अंग्रेजी भाषाओं में मूलतः दो-दो प्रतियों में किया गया, इसके सभी पाठ समानतः प्रभावित होते। तीनों गाठों में विश्वास की स्थिति में, अंग्रेजी पाठ प्रभावी होगा।

भारत गणराज्य की सरकार की ओर से कोरिया गणराज्य की सरकार की ओर से

(विष्वनाथ प्रसाद मिह)

विज्ञ संन्दी

(बाबू अम्बेदकर मिह)

विदेश संन्दी

### प्रोतोकोल

आज पर करों के संबंध में बोहरे काराधान के परिष्कार और राजस्व अपवर्तन को रोकने के लिए कोरिया गणराज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच हुए अधिसंयम पर कृत्यान्वय के रूप, अधोहस्तान्त्री महमत हो गए हैं कि निम्नलिखित उपलब्ध अधिसंयम के अनुसार अंग लिली।

1. अधिसंयम के प्रत्युष्टेद 2 के पैराप्राफ 3 के उप-पैराप्राफ (क) के संबंध में, यह समझा जाता है कि अधिसंयम उस कोरियाई रूप कर पर भी लागू होगा, अहो वह आपकर अथवा नियम कर के संदर्भ में प्रभावित होता है।

2. अधिसंयम के प्रत्युष्टेद 8 तथा 9 के प्रयोजनार्थ यह समझा जाता है कि :

(i) अन्तर्राष्ट्रीय यातायात में बायुयान और पोतों के सचाइन से संबंधित नियियों पर आज की भी देश बायुयान और पोतों के संचालन में प्राप्त लाभों के रूप में माना जाएगा; और

(ii) एक संविदाकारी राज्य के किसी उद्यम द्वारा जैसा गए अन्तर्राष्ट्रीय यातायात में बायुयान और पोतों के संचालन के संबंध में, उस उद्यम जो, यदि वह भारत का उद्यम है कोरिया में मूल्य वर्धित कर (बैलू एडेंट ईम्स) से भी छूट प्राप्त होगी, यदि कोरिया का कोई उद्यम है, तो कोरिया में मूल्य वर्धित कर के समान किसी कर से छूट प्राप्त होगी, जो इसके बाद भारत में भाग्या जा सकता है।

3. प्रत्युष्टेद 9 के संबंध में यह समझा जाता है कि इसके पैराप्राफ 1 और 2 के उपलब्ध उस काराधान वर्ष में अथवा उसके बाद चालाए गए जहाजरानी परिवहन के संबंध में लागू होंगे, जिसमें संविदाकारी राज्यों अथवा उनके प्राधिकृत नामित अधिकारी के बीच जहाजरानी परिवहन में संबंधित कोई काराधान गमन किया जाना है और प्रभावी होता है।

यह भी समझा जाता है कि जब तक संविदाकारी राज्यों अथवा उनके प्राधिकृत नामित-अधिकारी के बीच जहाजरानी परिवहन से संबंधित कोई काराधान प्रवर्तित होता है, तब उसके पैराप्राफ 2 निम्नानुसार पढ़ा जाएगा : “अन्तर्राष्ट्रीय यातायात में पोतों के संचालन से अनिवासित लाभों पर उस संविदाकारी राज्य में कर लगाया जाएगा जिसमें इस प्रकार का संचालन किया जाता है, लेकिन इस प्रकार लगाया गया कर उस राज्य के प्रान्तिक बाह्यन्दार द्वारा अन्यथा लगाए गए कर के ५० प्रतिशत से अधिक सही होंगा।”

4. अनुच्छेद 24 के पैराग्राफ 2 और 4 के संबंध में यह समझा जाता है कि उत्तर पैराग्राफों के उपबन्ध उन प्रथम पात्र वर्गों के लिये लागू होंगे जिनके लिए यह अधिसमय प्रभावी है लेकिन अंतिमार्थी वर्गों के समय प्राविकारी यह निर्वाचित करने के लिए एक दूसरे में प्राप्तमर्थ फ़र्कन है कि क्या यह अवधि बढ़ाई जाएगी।

जिसके माध्यम में भारतीयां अधिसमयों ने इस प्रोतोंकोल पर हस्ताक्षर किया है यह वही माध्यम और वधूता हीग़ है जिसे कि वह इस अधिसमय में प्राप्तगत अन्त अवधियां लिया गया हो।

नई हिन्दी में यह एक हजार तो मी प्रियार्थी के जूलाई, मास के 19वें दिन को हिन्दी, कोरियाई तथा अंग्रेजी भाषाओं में सूलत दो-दो प्रतिगांठ में दिया गया, इसके बादी पाठ सामान्य प्रामाणिक होंगे। तीनों पाठों में अन्तिम की स्थिति में अंग्रेजी पाठ प्रभावी होगा।

भारत गणराज्य की सरकार की ओर से कोरिया गणराज्य की सरकार की ओर से  
(विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

बन मर्वा विदेश मंत्री

भारतीय राजदूतावास  
मिश्र

अनुगमन के दस्तावेजों के आदान-प्रदान का प्रोतोंकोल

ग्रन्थांक्याकारी, मुर्द्धा तुकाराम देवारे, कोरिया गणराज्य में भारतीय गणराज्य के विशिष्ट राजदूत और पूर्णविकारी और कोरिया गणराज्य के विशेष-कार्य मंत्रालय से अलगरेंट्रीप्र संगठन व संघिय वर्गों के महानियेंगक जिन दोनोंने ने, जो अन्ती-ज्ञानी सरकारी द्वारा विधिकरूप से प्राप्तिकृत है, आप पर वर्गों के संबंध में दोहरे कराधान के परिणार और किनीथ प्रपर्वकत की रैकने के लिए, भारतीय गणराज्य की सरकार और कोरिया गणराज्य की सरकार के बीच हाए अधिसमयों के अनुगमन के दस्तावेजों आदान-प्रदान के प्रयोजनार्थ बैठक की, जिस पर 19 जूलाई, 1945 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर किया गया।

उपर्युक्त अधिसमय के अनुगमन के अपनेअपने दस्तावेजों की जाव करने के बाद उन्हें उचित रूप से भारतीय राजदूत द्वारा सम्मान हुआ, दोनों प्रतिवासी समानतः प्रामाणिक होंगी।

जिसके अधिसमय के अनुगमन के अपनेअपने दस्तावेजों की जाव करने के बाद उन्हें उचित रूप से भारतीय राजदूत द्वारा सम्मान हुआ, दोनों प्रतिवासी समानतः प्रामाणिक होंगी।

मिश्राल में 1936 के अगस्त, मास के प्रथम दिन, दो प्राप्तियों में सूलत रूप में अंग्रेजी भाषा में सम्मान हुआ, दोनों प्रतिवासी समानतः प्रामाणिक होंगी।

हस्ता. /-

हस्ता. /-

(एस. ए. देवारे)

(मिश्र का-बाक)

भारतीय गणराज्य की सरकार  
की ओर से

कोरिया गणराज्य की सरकार  
की ओर से

[सं 8937-कां म 501/22/73 वा क ए]

वि. गु. प्रद्युम्न संयुक्त सचिव।

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

(Foreign Tax Division)

New Delhi, the 26th September, 1986

## NOTIFICATION

### INCOMB TAX

G.S.R. 1111(E).—Whereas the annexed Convention between the Government of the Republic of India and the Government of the Republic of Korea for the avoidance of double taxation and the prevention of fiscal evasion with respect to taxes on income has been ratified and the instruments of ratification exchanged, as required by paragraph 1 of Article 29 of the said Convention, on 1st August, 1986;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 90 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), and section 24A of the Companies (Profits) Surtax Act, 1964 (7 of 1964), the Central Government hereby directs that all the provisions of the said Convention shall be given effect to in the Union of India.

## CONVENTION

### BETWEEN

THE GOVERNMENT OF THE REPUBLIC OF INDIA  
AND

THE GOVERNMENT OF THE REPUBLIC OF KOREA  
FOR

THE AVOIDANCE OF DOUBLE TAXATION AND THE  
PREVENTION OF FISCAL EVASION WITH RESPECT  
TO TAXES ON INCOME

The Government of the Republic of India and the Government of the Republic of Korea,

Desiring to conclude a Convention for the avoidance of double taxation and the prevention of fiscal evasion with respect to taxes on income,

Have agreed as follows :

## Article I

### PERSONAL SCOPE

This Convention shall apply to persons who are residents of one or both of the Contracting States.

## Article 2

### TAXES COVERED

1. The Convention shall apply to taxes on income imposed on behalf of each Contracting State irrespective of the manner in which they are levied.

2. There shall be regarded as taxes on income all taxes imposed on total income, or on elements of income, including taxes on gains from the alienation of movable or immovable property and taxes on the total amounts of wages or salaries paid by enterprises.

3. The existing taxes to which the Convention shall apply are :

(a) In the case of Korea :

- (i) the income tax ;
- (ii) the corporation tax; and
- (iii) the inhabitant tax ;

(hereinafter referred to as "Korean tax") ;

(b) In the case of India :

- (i) the income-tax including any surcharge thereon imposed under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) ;
- (ii) the surtax imposed under the Companies (Profits) Surtax Act, 1964 (7 of 1964) ;

(hereinafter referred to as "Indian tax") .

4. The Convention shall apply also to any identical or substantially similar taxes which are imposed after the date of signature of this Convention in addition to, or in place of, the existing taxes. The Competent authorities of the Contracting States shall notify each other of any substantial changes which have been made in their respective taxation laws.

### Article 3

#### GENERAL DEFINITIONS

1. In this Convention unless the context otherwise requires :

- (a) the terms "a Contracting State" and "the other Contracting State" mean Korea or India as the context requires ;
- (b) the term "tax" means Korean tax or Indian tax, as the context requires ;
- (c) the term "person" includes an individual, a company and any other body of persons which is treated as an entity for tax purposes ;
- (d) the term "company" means any body corporate or any entity which is treated as a body corporate for tax purposes ;
- (e) the terms "enterprise of a Contracting State" and "enterprise of the other Contracting State" mean respectively an enterprise carried on by a resident of a Contracting State and an enterprise carried on by a resident of the other Contracting State ;
- (f) the term "competent authority" means, in the case of Korea, the Minister of Finance or his authorised representative; and in the case of India, the Central Government in the Ministry of Finance (Department of Revenue) or its authorised representative ;
- (g) the term "national" means any individual possessing the nationality of a Contracting State and any legal person, partnership, association or other entity deriving its status as such from the laws in force in the Contracting State ;
- (h) the term "international traffic" means any transport by a ship or aircraft operated by an enterprise of a Contracting State, except when the ship or aircraft is operated solely between places in the other Contracting State.

2. As regards the application of this Convention by either Contracting State any term not otherwise defined shall, unless the context otherwise requires, have the meaning which it has under the laws of that Contracting State relating to the taxes which are the subject of this Convention.

### Article 4

#### FISCAL DOMICILE

1. For the purposes of the Convention the term "resident of a Contracting State" means any person who, under the laws of that State, is liable to taxation therein by reason of his domicile, residence, place of head or main office, place of management or any other criterion of a similar nature.

2. Where by reason of the provisions of paragraph 1, an individual is a resident of both Contracting States, then his status shall be determined as follows :

- (a) he shall be deemed to be a resident of the State in which he has a permanent home available to him, if he has a permanent home available to him in both States, he shall be deemed to be a resident of the State with which his personal and economic relations are closer (centre of vital interests) ;
- (b) if the State in which he has his centre of vital interests can not be determined, or if he has not a permanent home available to him in either State, he shall be deemed to be a resident of the State in which he has an habitual abode ;
- (c) if he has an habitual abode in both States or in neither of them, he shall be deemed to be a resident of the State of which he is a national ;
- (d) if he is a national of both States or of neither of them, the competent authorities of the Contracting States shall settle the question by mutual agreement.

3. Where by reason of the provisions of paragraph 1, a person other than an individual is a resident of both Contracting States, then it shall be deemed to be a resident of the State in which its place of effective management is situated. In case of doubt the competent authorities of the Contracting States shall settle the question by mutual agreement.

### Article 5

#### PERMANENT ESTABLISHMENT

1. For the purposes of this Convention, the term "permanent establishment" means a fixed place of business through which the business of an enterprise is wholly or partly carried on.

2. The term "permanent establishment" shall include especially :

- (a) a place of management ;
- (b) a branch ;
- (c) an office;
- (d) a factory ;
- (e) a workshop ; and
- (f) a mine, an oil or gas well, a quarry or any other place of extraction of natural resources.

3. The term "permanent establishment" likewise encompasses a building site, a construction assembly or installation project or supervisory activities in connection therewith, but only where such site, project or activities continue for a period of more than nine months.

4. Notwithstanding the preceding provisions of this Article, the term "permanent establishment" shall be deemed not to include :

- (a) the use of facilities solely for the purpose of storage, display or delivery of goods or merchandise belonging to the enterprise ;
- (b) the maintenance of a stock of goods or merchandise belonging to the enterprise solely for the purpose of storage, display or delivery ;
- (c) the maintenance of a stock of goods or merchandise belonging to the enterprise solely for the purpose of processing by another enterprise ;

(d) the maintenance of a fixed place of business solely for the purpose of purchasing goods or merchandise or for collecting information for the enterprise;

(e) the maintenance of a fixed place of business solely for the purpose of advertising, the supply of information, scientific research, or any other activity, if it has a preparatory or auxiliary character in the trade or business of the enterprise;

(f) the maintenance of a fixed place of business solely for any combination of activities mentioned in sub-paragraphs (a) to (e) of this paragraph, provided that the overall activity of the fixed place of business resulting from this combination is of a preparatory or auxiliary character.

5. Notwithstanding the provisions of paragraphs 1 and 2, if a person—other than an agent of independent status to whom paragraph 6 applies—is acting on behalf of an enterprise and has, and habitually exercises, in a Contracting State an authority to conclude contracts in the name of the enterprise, that enterprise shall be deemed to have a permanent establishment in that State in respect of any activities which that person undertakes for the enterprise, unless the activities of such person are limited to those mentioned in paragraph 4 which, if exercised through a fixed place of business, would not make this fixed place of business a permanent establishment by virtue of that paragraph.

6. An enterprise shall not be deemed to have a permanent establishment in a Contracting State merely because it carries on business in that State through a broker, general commission agent or any other agent of an independent status, where such persons are acting in the ordinary course of their business.

7. The fact that a company which is a resident of a Contracting State controls or is controlled by a company which is a resident of the other Contracting State, or which carries on business in that other State (whether through a permanent establishment or otherwise) shall not of itself constitute either company a permanent establishment of the other.

#### Article 6

##### INCOME FROM IMMOVABLE PROPERTY

1. Income from immovable property may be taxed in the Contracting State in which such property is situated.

2. The term "immovable property" shall be defined in accordance with the law of the Contracting State in which the property in question is situated. The term shall in any case include property accessory to immovable property, livestock and equipment used in agriculture and forestry, rights to which the provisions of general law respecting landed property apply, usufruct of immovable property and rights to variable or fixed payments as consideration for the working of, or the right to work, mineral deposits, sources and other natural resources; ships, boats and aircraft shall not be regarded as immovable property.

The provisions of paragraph 1 shall apply to income derived from the ownership, use or occupation or use in any other form of immovable property.

4. The provisions of paragraphs 1 and 5 shall also apply to the income from immovable property of an enterprise and to income from immovable property used for the performance of independent personal services.

#### Article 7

##### BUSINESS PROFITS

1. The profits of an enterprise of a Contracting State shall be taxable only in that State unless the enterprise carries on business in the other Contracting State through a permanent establishment situated therein. If the enterprise carries on business as aforesaid, the profits of the enterprise may be taxed in the other State but only so much of them as is attributable to that permanent establishment.

2. Subject to the provisions of paragraph 3 where an enterprise of a Contracting State carries on business in the other Contracting State through a permanent establishment situated therein, there shall in each Contracting State be attributed to that permanent establishment the profits which it might be expected to make if it were a distinct and separate enterprise engaged in the same or similar activities under the same or similar conditions and dealing wholly independently with the enterprise of which it is a permanent establishment.

3. In the determination of the profits of a permanent establishment, there shall be allowed as deductions expenses which are incurred for the purposes of the permanent establishment including executive and general administrative expenses so incurred, whether in the State in which the permanent establishment is situated or elsewhere, which are allowed under the provisions of the domestic law of the Contracting State in which the permanent establishment is situated.

4. No profits shall be attributed to a permanent establishment by reason of the mere purchase by that permanent establishment of goods or merchandise for the enterprise.

5. For the purposes of the preceding paragraphs, the profits to be attributed to the permanent establishment shall be determined by the same method year by year unless there is good and sufficient reason to the contrary.

6. Where income or profits include items of income which are dealt with separately in other Articles of this Convention, then the provisions of those Articles shall not be effected by the provisions of this Article.

#### Article 8

##### AIR TRANSPORT

1. Profits from the operation of aircraft in international traffic carried on by an enterprise of a Contracting State shall be taxable only in that State.

2. The provisions of paragraph 1 shall also apply to profits derived from the participation in a pool, a joint business or in an international operating agency.

3. For the purposes of this Article the term "operation of aircraft" shall include transportation by air of persons, livestock, goods or mail, carried on by the owners or lessees or charterers of aircraft, including the sale of tickets for such transportation on behalf of other enterprises, the incidental lease of aircraft on a charter basis and any other activity directly connected with such transportation.

#### Article 9

##### SHIPPING TRANSPORT

1. Profits derived by an enterprise of a Contracting State from the operation of ships in international traffic shall be taxable only in that State.

2. Notwithstanding the provisions of paragraph 1 of this Article, profits derived from the operation of ships in international traffic may be taxed in the Contracting State in which such operation is carried on; but the tax so charged shall not exceed 50 per cent of the tax otherwise imposed by the internal law of that State.

3. The provisions of paragraphs 1 and 2 of this Article shall also apply to profits derived from the participation in a pool, a joint business or an international operating agency.

#### Article 10

##### ASSOCIATED ENTERPRISES

Where

(a) an enterprise of a Contracting State participates directly or indirectly in the management, control or capital of an enterprise of the other Contracting State, or

(b) the same persons participate directly or indirectly in the management, control or capital of an enterprise of a Contracting State and an enterprise of the other Contracting State,

and in either case conditions are made or imposed between the two enterprises in their commercial or financial relations which differ from those which would be made between independent enterprises, then any profits which would, but for those conditions, have accrued to one of the enterprises, but, by reason of those conditions, have not so accrued, may be included in the profits of that enterprise and taxed accordingly.

5. Where a company which is a resident of a Contracting State derives profits or income from the other Contracting State that other State may not impose any tax on the dividends paid by the company, except insofar as such dividends are paid to a resident of that other State or insofar as the holding in respect of which the dividends are paid is effectively connected with a permanent establishment or a fixed base situated in that other State, nor subject the company's undistributed profits to a tax on the company's undistributed profits even if the dividends paid or the undistributed profits consist wholly or partly of profits or income arising in such other State.

### Article 11

#### DIVIDENDS

1. Dividends paid by a company which is a resident of a Contracting State to a resident of the other Contracting State may be taxed in that other State.

2. However, such dividends may also be taxed in the Contracting State of which the company paying the dividends is a resident, and according to the laws of that State, but if the recipient is the beneficial owner of the dividends, the tax so charged shall not exceed:

(a) 15 per cent of the gross amount of the dividends if the beneficial owner is a company which owns directly at least 20 per cent of the capital of the company paying the dividends;

(b) 20 per cent of the gross amount of the dividends in all other cases.

This paragraph shall not affect the taxation of the company in respect of the profits out of which the dividends are paid.

3. The term 'dividends' as used in this Article means income from shares, or other rights, not being debt-claims, participating in profits, as well as income from other corporate rights which is subjected to the same taxation treatment as income from shares by the laws of the State of which the company making the distribution is a resident.

4. The provisions of paragraphs 1 and 2 shall not apply if the beneficial owner of the dividends, being a resident of a Contracting State, carries on business in the other Contracting State of which the company paying the dividends is a resident, through a permanent establishment situated therein or performs in that other State independent personal services from a fixed base situated therein and the holding in respect of which the dividends are paid is effectively connected with such permanent establishment or fixed base. In such cases the provisions of Article 7 or Article 15, as the case may be, shall apply.

### Article 12

#### INTEREST

1. Interest arising in a Contracting State and paid to a resident of the other Contracting State may be taxed in that other State.

2. However, such interest may also be taxed in the Contracting State in which it arises, and according to the laws of that State, but if the recipient is the beneficial owner of the interest the tax so charged shall not exceed 15 per cent of the gross amount of the interest.

3. Notwithstanding the provisions of paragraph 2 of this Article:

(a) where the interest is paid to a bank carrying on a bona fide banking business which is a resident of the other Contracting State and is the beneficial owner of the interest, the tax charged in the Contracting State in which the interest arises shall not exceed 10 per cent of the gross amount of the interest;

(b) where the interest is paid to the Government of one of the Contracting States or a political sub-division or local authority or the Central Bank or the Export-Import Bank of that State, it shall not be subjected to tax by the State in which it arises.

4. The term "interest" as used in this Article means income from debt-claims of every kind, whether or not secured by mortgage and whether or not carrying a right to participate in the debtor's profits and, in particular, income from government securities and income from bonds or debentures, including premiums and prizes attaching to such securities, bonds or debentures.

5. The provisions of paragraphs 1, 2 and 3 shall not apply if the beneficial owner of the interest, being a resident of a Contracting State, carries on business in the other Contracting State in which the interest arises, through a permanent establishment situated therein, or performs in that other State independent personal services from a fixed base situated therein, and the debt-claims in respect of which the interest is "connected" with such permanent establishment or fixed base. In such cases the provisions of Article 7 or Article 15, as the case may be, shall apply.

6. Interest shall be deemed to arise in a Contracting State when the payer is that State itself, a political sub-division, a local authority or a resident of that State. Where, however, the person paying the interest, whether he is a resident of a Contracting State or not, has in a Contracting State a permanent establishment or a fixed base in connection with which the indebtedness on which the interest is paid was incurred, and such interest is borne by such permanent establishment or fixed base, then such interest shall be deemed to arise in the State in which the permanent establishment or the fixed base is situated.

7. Where, owing to a special relationship between the payer and the beneficial owner or between both of them and some other person, the amount of the interest, having regard to the debt-claim for which it is paid, exceeds the amount which would have been agreed upon by the payer and the beneficial owner in the absence of such relationship, the provisions of this Article shall apply only to the last-mentioned amount. In such cases, the excess part of the payments shall remain taxable according to the laws of each Contracting State, due regard being had to the other provisions of this Convention.

### Article 13

#### ROYALTIES AND FEES FOR TECHNICAL SERVICES

1. Royalties and fees for technical services arising in a Contracting State and paid to a resident of the other Contracting State may be taxed in that other State.

2. However, such royalties and fees for technical services may also be taxed in the Contracting State in which they arise and according to the laws of that State, but if the recipient is the beneficial owner of the royalties or fees for technical services, the tax so charged shall not exceed 15 per cent of the gross amount of the royalties or fees for technical services.

3. The term "royalties" as used in this Article means payments of any kind received as a consideration for the use of, or the right to use, any copyright of literary, artistic or scientific work including cinematograph films, or films or tapes used for radio or television broadcasting, any patent, trade mark, design or model, plan, secret formula or process, or for the use of, or the right to use, industrial, commercial or scientific equipment, or for information concerning industrial, commercial or scientific experience.

4. The term "fees for technical services" as used in this Article means payments of any kind to any person, other than payments to an employee of the person making the payments and to any individual for independent personal services mentioned in Article 15, in consideration for services of a managerial, technical or consultative nature, including the provision of services of technical or other personnel.

5. The provisions of paragraphs 1 and 2 of this Article shall not apply if the beneficial owner of the royalties or fees for technical services, being a resident of a Contracting State, carries on business in the other Contracting State in which the royalties or fees for technical services arise through a permanent establishment situated therein, or performs in that other State independent personal services from a fixed base situated therein, and the right, property or contract in respect of which the royalties or fees for technical services and paid is effectively connected with such permanent establishment or fixed base. In such cases the provisions of Article 7 or Article 15, as the case may be, shall apply.

6. Royalties and fees for technical services shall be deemed to arise in a Contracting State when the payer is that State itself, a political sub-division, a local authority or a resident of that State. Where, however, the person paying the royalties or fees for technical services, whether he is a resident of a Contracting State or not, has in a Contracting State a permanent establishment or a fixed base in connection with which the obligation to make the payments was incurred and the payments are borne by the permanent establishment or fixed base, then the royalties or fees for technical services shall be deemed to arise in the Contracting State in which the permanent establishment or fixed base is situated.

7. Where, owing to a special relationship between the payer and the beneficial owner or between both of them and some other person, the amount of the royalties or fees for technical services paid, having regard to the use, right or information for which they are paid, exceeds the amount which would have been agreed upon by the payer and the recipient in the absence of such relationship, the provisions of this Article shall apply only to the last-mentioned amount. In such cases, the excess part of the payments shall remain taxable according to the law of each Contracting State due regard being had to the other provisions of this Convention.

### Article 14

#### CAPITAL GAINS

1. Capital gains from the alienation of immovable property, as defined in paragraph 2 of Article 6 or from the alienation of shares in a company the assets of which consist principally of immovable property, may be taxed in the State in which such property is situated.

2. Gains from the alienation of movable property forming part of the business property of a permanent establishment which an enterprise of a Contracting State has in the other Contracting State or of movable property pertaining to a fixed base available to a resident of a Contracting State in the other Contracting State for the purposes of performing professional services including such gains from the alienation of such a permanent establishment (alone or together with the whole enterprise) or of such a fixed base may be taxed in the other State.

3. Notwithstanding the provisions of paragraph 1, gains by an enterprise of a Contracting State from the alienation of ships and aircraft which it operates in international traffic and movable property pertaining to the operation of such ships and aircraft shall be taxable only in that State.

4. Gains from the alienation of any property, other than those mentioned in preceding paragraphs of this Article, shall be taxable only in the Contracting State of which the alienator is a resident.

5. The term "alienation" shall mean alienation in accordance with the law of the Contracting State in which the property in question is situated.

### Article 15

#### INDEPENDENT PERSONAL SERVICES

1. Income derived by an individual who is a resident of a Contracting State from the performance of professional services or other independent activities of a similar character shall be taxable only in that State unless he has a fixed base regularly available to him in the other Contracting State for the purpose of performing his activities. If he has such a fixed base, the income may be taxed in the other Contracting State but only so much of it as is attributable to that fixed base.

2. The term "professional services" includes especially independent scientific, literary, artistic, educational or teaching activities as well as the independent activities of physicians, surgeons, lawyers, engineers, architects, dentists and accountants.

### Article 16

#### DEPENDENT PERSONAL SERVICES

1. Subject to the provisions of Articles 17, 19, 20, 21 and 22, salaries, wages and other similar remuneration derived by a resident of a Contracting State in respect of an employment shall be taxable only in that State unless the employment is exercised in the other Contracting State. If the employment is so exercised, such remuneration as is derived therefrom may be taxed in that other State.

2. Notwithstanding the provisions of paragraph 1, remuneration derived by a resident of a Contracting State in respect of an employment exercised in the other Contracting State shall be taxable only in the first-mentioned State if :

(a) the recipient is present in the other State for a period or periods not exceeding in the aggregate 183 days in the "previous year" or "taxation year" concerned, as the case may be; and

(b) the remuneration is paid by, or on behalf of, an employer who is not a resident of the other State; and

(c) the remuneration is not borne by a permanent establishment or a fixed base which the employer has in the other State.

3. Notwithstanding the preceding provisions of this Article, remuneration derived by a resident of a Contracting State in respect of an employment exercised abroad a ship or aircraft operated in international traffic, shall be taxable only in that State.

### Article 17

#### DIRECTORS' FEES AND REMUNERATION OF TOP-LEVEL MANAGERIAL OFFICIALS

1. Directors' fees and other similar payments derived by a resident of a Contracting State in his capacity as a member of the Board of Directors of a Company which is a resident of the other Contracting State may be taxed in that other State.

2. Salaries, wages and other similar remuneration derived by a resident of a Contracting State in his capacity as an official in a top-level managerial position of a company which is a resident of the other Contracting State may be taxed in that other State.

### Article 18

#### ARTISTES AND ATHLETES

1. Notwithstanding the provisions of Article 15, income derived by a resident of a Contracting State as an entertainer, such as a theatre, motion picture, radio or television artiste, or a musician, or as an athlete, from his personal activities as such exercised in the other Contracting State, may be taxed in that other State.

2. Where income in respect of personal activities exercised by an entertainer or athlete in his capacity as such accrues not to the entertainer or athlete himself but to another person, that income may, notwithstanding the provisions of Articles 7 and 15, be taxed in the Contracting State in which the activities of the entertainer or athlete are exercised.

3. The provisions of paragraphs 1 and 2 shall not apply to remuneration or profits, salaries, wages and similar income derived from activities performed in a Contracting State by entertainers or athletes if their visit to that State is substantially supported from the public funds of the other Contracting State, a political sub-division or a local authority thereof.

### Article 19

#### PENSIONS

Subject to the provisions of paragraphs 2 and 3 of Article 20, pensions and other similar remuneration paid to a resident of a Contracting State in consideration of past employment shall be taxable only in that State.

### Article 20

#### GOVERNMENT FUNCTIONS

1. (a) Remuneration, other than a pension, paid by a Contracting State or a political sub-division or a local authority thereof, to an individual in respect of service rendered to that State or sub-division or authority shall be taxable only in that State.

(b) However, such remuneration shall be taxable only in the other Contracting State if the services are rendered in that State and the individual is a resident of that State who :

(i) is a national of that State; or

(ii) did not become a resident of that State solely for the purpose of rendering the services.

2. (a) Any pension paid by or out of funds created by, a Contracting State or a political sub-division or a local authority thereof to an individual in respect of services rendered to that State or sub-division or authority shall be taxable only in that State.

(b) However, such pensions shall be taxable only in the other Contracting State if the individual is a resident of, and a national of, that State.

3. The provisions of Article 16, 17 and 19 shall apply to remuneration and pensions in respect of services rendered in connection with a business carried on by a Contracting State or a political subdivision or a local authority thereof.

4. The provisions of paragraph 1 of this Article shall likewise apply in respect of remuneration or pensions paid, in the case of Korea, by the Bank of Korea, the Export-Import Bank of Korea and the Korea Trade Promotion Corporation and in the case of India, by the Reserve Bank of India and the EXIM Bank of India, and by organizations recognized by and agreed between the competent authorities of the Contracting States.

### Article 21

#### PAYMENTS RECEIVED BY STUDENTS AND APPRENTICES

1. A student or business apprentice who is or was a resident of one of the Contracting States immediately before visiting the other Contracting State and who is present in that other State solely for the purpose of his education or training shall be exempt from tax in that other State on :

- (a) payments made to him by persons residing outside that other State for the purposes of his maintenance, education or training; and
- (b) remuneration from employment in that other State, in an amount not exceeding one million and one hundred thousand Korean Won or its equivalent in Indian currency during any "previous year" or the "taxation year", as the case may be, provided that such employment is directly related to his studies or is undertaken for the purpose of his maintenance.

2. The benefits of this article shall extend only for such period of time as may be reasonable or customarily required to complete the education or training undertaken, but in no event shall any individual have the benefits of this article for more than five consecutive years from the date of his first arrival in that other Contracting State.

### Article 22

#### PROFESSORS, TEACHERS AND RESEARCH SCHOLARS

1. An individual who is or was a resident of a Contracting State immediately before making a visit to the other Contracting State, and who, at the invitation of any university, college, school or other similar educational institution, which is recognised by the competent authority in that other State, visits that other State solely for the purpose of teaching or research or both at such educational institution, shall be exempt from tax in that other State on his remuneration for such teaching or research, for a period not exceeding two consecutive years from the date of his first arrival in that other State.

2. This Article shall not apply to income from research if such research is undertaken primarily for the private benefit of a specific person or persons.

### Article 23

#### OTHER INCOME

Items of income of a resident of a Contracting State, wherever arising, not dealt with in the foregoing Articles of this Convention shall be taxable only in that State.

### Article 24

#### ELIMINATION OF DOUBLE TAXATION

1. In the case of a resident of Korea, double taxation shall be avoided as follows :

Subject to the provisions of Korean tax law regarding the allowance as a credit against Korean tax of tax payable in any country other than Korea (which shall not affect the general principle hereof), the Indian tax payable (excluding in the case of a dividend, tax payable in respect of the profits out of which the dividend is paid) under the laws of India and in accordance with this Convention, whether directly or by deduction, in respect of income from sources within India shall be allowed as a credit against Korean tax payable in respect of that income. The credit shall not, however, exceed that proportion of Korean tax which the income from sources within India bears to the entire income subject to Korean tax.

2. For the purposes of paragraph 1, the term "Indian tax payable" shall be deemed to include the amount of Indian tax which would have been payable in accordance with Indian tax laws but for the exemption or reduction of Indian tax in accordance with the laws relating to incentives for the promotion of economic development in India which were in force on the date of signature of this Convention or any other provisions which may subsequently be introduced in India in modification of, or in addition to, those laws so far as they are agreed by the competent authorities of the Contracting States, provided that the amount of the tax referred to in this paragraph shall not, however, exceed :

- (a) in the case of dividends referred to in paragraph 2 (a) of Article 11 an amount of 15 per cent of the gross amount of such dividends and, in the case of dividends referred to in paragraph 2 (b) of Article 11 an amount of 20 per cent of the gross amount of such dividends;
- (b) in the case of interest referred to in paragraph 2 of Article 12 an amount of 15 per cent of the gross amount of such interest and in the case of interest referred to in paragraph 3 (a) of Article 12 an amount of 10 per cent of the gross amount of such interest; and
- (c) in the case of royalties referred to in paragraph 2 of Article 12 an amount of 15 per cent of the gross amount of such royalties.

3. In the case of a resident of India, double taxation shall be avoided as follows :

Subject to the provisions of Indian tax law regarding the allowance as a credit against Indian tax of tax payable in any country other than India (which shall not affect the general principle hereof), the Korean tax payable (excluding in the case of a dividend, tax payable in respect of the profits out of which the dividend is paid) under the laws of Korea and in accordance with this Convention, whether directly or by deduction, in respect of income from sources within Korea shall be allowed as a credit against Indian tax payable in respect of that income. The credit shall not, however, exceed that proportion of Indian tax which the income from sources within Korea bears to the entire income subject to Indian tax.

4. For the purposes of paragraph 3, the term "Korean tax payable" shall be deemed to include the amount of Korean tax which would have been payable in accordance with Korean tax laws but for the exemption or reduction of Korean tax in accordance with the laws relating to incentives for the promotion of economic development in Korea which were in force on the date of signature of this Convention or any other provisions which may subsequently be introduced in Korea in modification of, or in addition to, those laws so far as they are agreed by the competent authorities of the Contracting States, provided that the amount of the tax referred to in this paragraph shall not, however, exceed :

- (a) in the case of dividends referred to in paragraph 2 (a) of Article 11 an amount of 15 per cent of the gross amount of such dividends and, in the case of dividends referred to in paragraph 2 (b) of Article 11 an amount of 20 per cent of the gross amount of such dividends;
- (b) in the case of interest referred to in paragraph 2 of Article 12 an amount of 15 per cent of the gross amount of such interest and in the case of interest referred to in paragraph 3 (a) of Article 12 an amount of 10 per cent of the gross amount of such interest; and
- (c) in the case of royalties referred to in paragraph 2 of Article 13 an amount of 15 per cent of the gross amount of such royalties.

### Article 25

#### NON-DISCRIMINATION

1. The nationals of a Contracting State shall not be subjected in the other Contracting State to any taxation or any requirement connected therewith which is other or more burdensome than the taxation and connected requirements to which nationals of that other State in the same circumstances are or may be subjected.

2. The taxation on a permanent establishment which an enterprise of a Contracting State has in the other Contracting State shall not be less favourably levied in that other State than the taxation levied on enterprises of that other State carrying on the same activities.

This provision shall not be constituted as obliging a Contracting State to grant to residents of the other Contracting State any personal allowances, reliefs and reductions for taxation purposes on account of civil status or family responsibilities which it grants to its own residents.

3. Except where the provisions of Article 10, paragraph 7 of Article 12, or paragraph 7 of Article 13 apply, interest, royalties and other disbursements paid by an enterprise of a Contracting State to a resident of the other Contracting State shall, for the purpose of determining the taxable profits of such enterprise, be deductible under the same condition as if they had been paid to a resident of the first-mentioned State.

4. Enterprises of a Contracting State, the capital of which is wholly or partly owned or controlled, directly or indirectly, by one or more residents of the other Contracting State, shall not be subjected in the first-mentioned Contracting State to any taxation or any requirement connected therewith which is other or more burdensome than the taxation and connected requirements to which other similar enterprises of that first-mentioned State are or may be subjected.

5. The provisions of this Article shall, notwithstanding the provisions of Article 2, apply to taxes of every kind and description.

### Article 26

#### MUTUAL AGREEMENT PROCEDURE

1. Where a resident of a Contracting State considers that the actions of one or both of the Contracting States result or will result for him in taxation not in accordance with this Convention, he may, notwithstanding the remedies provided by the national laws of those States, present his case to the competent authority of the Contracting State of which he is a resident

or, if his case comes under paragraph 1 of Article 25, to that of the Contracting State of which he is a national. This case must be presented within three years from the first Notification of the action giving rise to taxation not in accordance with the Convention.

2. The competent authority shall endeavour, if the objection appears to it to be justified and if it is not itself about to arrive at an appropriate solution, to resolve the case by mutual agreement with the competent authority of the other Contracting State, with a view to the avoidance of taxation which is not in accordance with the Convention. Any agreement reached shall be implemented notwithstanding any time limits in the national laws of the Contracting States.

3. The competent authorities of the Contracting States shall endeavour to resolve by mutual agreement any difficulties or doubts arising as to the interpretation or application of the Convention. They may also consult together for the elimination of double taxation in cases not provided for in the Convention.

4. The competent authorities of the Contracting States may communicate with each other directly for the purpose of reaching an agreement in the sense of the preceding paragraphs. When it seems advisable in order to reach agreement to have an oral exchange of opinions, such exchange may take place through a Commission consisting of representatives of the competent authorities of the Contracting States.

### Article 27

#### EXCHANGE OF INFORMATION

1. The competent authorities of the Contracting States shall exchange such information (including documents) as is necessary for carrying out the provisions of this Convention or of the domestic laws of the Contracting States concerning taxes covered by the Convention, in so far as the taxation thereunder is not contrary to the Convention in particular for the prevention of fraud or evasion of such taxes. The exchange of information is not restricted by Article 1. Any information received by a Contracting State shall be treated as secret in the same manner as information obtained under the domestic laws of that State.

However, if the information is originally regarded as secret in the transmitting State it shall be disclosed only to persons or authorities (including courts and administrative bodies) involved in the assessment or collection of, the enforcement or prosecution in respect of, or the determination of appeals in relation to, the taxes which are the subject of the Convention. Such persons or authorities shall use the information only for such purposes but may disclose the information in public court, proceedings or in judicial decisions. The competent authorities shall, through consultation, develop appropriate conditions, methods and techniques concerning the matters in respect of which such exchanges of information shall be made, including, where appropriate, exchanges of information regarding tax avoidance.

2. In no case shall the provisions of paragraph 1 be construed so as to impose on a Contracting State the obligation:

- (a) to carry out administrative measures at variance with the laws and administrative practice of that or of the other Contracting State;
- (b) to supply information which is not obtainable under the laws or in the normal course of the administration of that or of the other Contracting State;
- (c) to supply information which would disclose any trade, business, industrial, commercial or professional secret or trade process, or information, the disclosure of which would be contrary to public policy (ordre public).

#### Article 28

#### DIPLOMATIC AGENTS AND CONSULAR OFFICERS

Nothing in this Convention shall affect the fiscal privileges of diplomatic agents and consular officers under the general rules of international law or under the provisions of special agreements.

#### Article 29

#### ENTRY INTO FORCE

1. This Convention shall be ratified and the instruments of ratification shall be exchanged at Seoul as soon as possible.

The Convention shall enter into force on the thirtieth day after the date of exchange of the instruments of ratification.

2. This Convention shall have effect:

(a) in Korea:

- (i) in respect of tax withheld at the source on amounts paid or credited to non-residents on or after the first day of January of the calendar year next following that in which the Convention is initialled; and
- (ii) in respect of other taxes for taxation years beginning on or after the first day of January of the calendar year next following that in which the Convention is initialled.

(b) in India:

- (i) in respect of tax withheld at the source on amounts paid or credited to non-residents on or after the first day of April of the calendar year next following that in which the Convention is initialled; and
- (ii) in respect of other taxes for previous years beginning on or after the first day of April of the calendar year next following that in which the Convention is initialled.

#### Article 30

#### TERMINATION

The Convention shall remain in force indefinitely but either of the Contracting States may, on or before the thirtieth day of June in any calendar year beginning after the expiration of a period of five years from the date of its entry into force, give the other Contracting State through diplomatic channels, written notice of termination and, in such event, this Convention shall cease to have effect:

(a) in Korea:

- (i) in respect of tax withheld at the source on amounts paid or credited to non-residents on or after the first day of January next following the calendar year in which the notice of termination is given; and
- (ii) in respect of other taxes for taxation years beginning on or after the first day of January next following the calendar year in which the notice of termination is given.

(b) in India:

- (i) in respect of tax withheld at the source on amounts paid or credited to non-residents on or after the first day of April next following the calendar year in which the notice of termination is given; and
- (ii) in respect of other taxes for previous years beginning on or after the first day of April next following the calendar year in which the notice of termination is given.

In witness whereof the undersigned, being duly authorised thereto, have signed the present Convention.

Done in duplicate at New Delhi this 19th day of July one thousand nine hundred and eighty five on three original copies each in the Hindi, Korean and English languages, all the texts being equally authentic. In case of divergence between the three texts, the English text shall be the operative one.

For the Government of the

Republic of India

(VISHWANATH PRATAP SINGH)  
MINISTER OF FINANCE

For the Government of  
the Republic of Korea

(WON KYUNG LEE)  
MINISTER OF FOREIGN AFFAIRS

## PROTOCOL

At the moment of signing the Convention between the Government of the Republic of India and the Government of the Republic of Korea for the Avoidance of Double Taxation and the Prevention of Fiscal Evasion with respect to Taxes on Income, the undersigned have agreed that the following provisions shall form an integral part of the convention.

1. In respect of subparagraph (a) of paragraph 3 of Article 2 of the Convention, it is understood that the Convention shall also apply to the Korean defence tax where charged by reference to the income tax or the corporation tax.

2. For the purposes of Articles 8 and 9 of the Convention, it is understood that:

- (i) interest on funds connected with the operation of aircraft and ships in international traffic shall also be regarded as profits from the operation of such aircraft and ships; and
- (ii) in respect of the operation of aircraft and ships in international traffic carried on by an enterprise of a Contracting State, that enterprise, if an enterprise of India, shall also be exempt from the value added tax in Korea and, if an enterprise of Korea, shall also be exempt from any tax similar to the value added tax in Korea, which may hereafter be imposed in India.

3. In respect of Article 9 it is understood that the provisions of its paragraphs 1 and 2 shall apply in respect of shipping transport carried on or after the taxation year in which an agreement related to shipping transport between the Contracting States or their authorized nominees is concluded and becomes effective.

It is further understood that until an agreement relating to shipping transport between the Contracting States or their authorised nominees enters into force, paragraph 2 shall read as follows: "profits derived from the operation of ships in international traffic may be taxed in the Contracting State in which such operation is carried on; but the tax so charged shall not exceed 90 per cent of the tax otherwise imposed by the internal law of that State."

4. In respect of paragraphs 2 and 4 of Article 24, it is understood that the provisions of those paragraphs shall apply for the first 5 years for which this Convention is effective but the competent authorities of the Contracting States may consult each other to determine whether this period shall be extended.

In witness whereof, the undersigned have signed the present protocol which shall have the same force and validity as if it were inserted word by word in the Convention.

Done in duplicate at New Delhi this 19th day of July of the year one thousand nine hundred and eighty five on three original copies each in the Hindi Korean and English languages, all the texts being equally authentic. In case of divergence between the three texts, the English text shall be the operative one.

For the Government of the Republic of India

(VISHWANATH PRATAP SINGH)  
MINISTER OF FINANCE

For the Government of the Republic of Korea

(WON KYUNG LEE)  
MINISTER OF FOREIGN AFFAIRS

भारत य राजदूतावास, दिल्ली  
EMBASSY OF INDIA  
SEOUL

## PROTOCOL OF

## EXCHANGE OF INSTRUMENTS OF RATIFICATION

The undersigned, Sudhir Tukaram Devare, Ambassador Extraordinary and Plenipotentiary of the Republic of India to the Republic of Korea, and Shin Kee-Bock, Director-General of the International Organizations and Treaties Bureau, Ministry of Foreign Affairs of the Republic of Korea, being duly authorized by their respective Governments, have met for the purpose of exchanging the Instruments of Ratification of the Convention between the Government of the Republic of India and the Government of Republic of Korea for the Avoidance of Double Taxation and the Prevention of Fiscal Evasion with respect to Taxes on Income, which was signed at New Delhi on 19 July 1985.

The respective Instruments of Ratification of the aforementioned Convention having been examined and found to be in good and due form, the exchange thereof took place this day.

In witness whereof, they have signed the present Protocol.

Done in two originals in the English language, both being equally authentic, at Seoul this first day of August, 1986.

Sd/- Illegible  
FOR THE GOVERNMENT OF  
THE REPUBLIC OF INDIA

Sd/- Illegible  
FOR THE GOVERNMENT OF  
THE REPUBLIC OF KOREA  
[No. 6937-F No. 501/22/73-FTDI  
V. U. ERADI, Jt. Secy.